SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 22 • ISSUE 08 • OCTOBER 2023

हिन्दी मासिक

अक्तूबर 2023

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

सहाबा–ए–किराम (रज़ि.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरबियत का एजाज़ सहाबा की जमाअत है और यह इस्लाम का चमत्कार है, समस्त मानवीय विशेषताएं इस समूह में सिमट कर आ गईं थीं उनकी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के लिए थी, अम्बिया और रसूलों के बाद कोई जमाअत अगर सबसे बेहतर हो सकती है तो वह यही सहाबा थे जिनकी संख्या एक लाख से ज़्यादा थी। सहाबा को अल्लाह ने जो फ़ज़ीलत व बरतरी अता फरमाई थी उस में उनका क़यामत तक कोई हमपल्ला न हो सकेगा।

(मौलाना सय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह.)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक   लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अक्तूबर 2023   वर्ष 22   अंक 08

''नव-युग''

यूँ तो इस दुनिया की उम्र बहुत बताई जाती है मगर यह दुनिया अनेक बार सो–सो कर जागी है और मर–मर कर ज़िन्दा हुई है। पिछली बार जब यह मौत की नींद से जागी और उसे सद्बुद्धि प्राप्त हुई वह, वह दिन था जब मक्का के सरदार अब्दुल मुत्तलिब के घर पोता पैदा हुआ। वह पैदा हुआ तो यतीम (अनाथ) था मगर उसने पूरी मानवता की संरक्षता की और दुनिया को नया जीवन दिया। इसलिए सच पूछिये तो वर्तमान दुनिया की काम की उम्र चौदह सौ वर्ष से अधिक नहीं।

(हज़रत मौलाना सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
ईमान की वास्तविकता	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
दीनी दावत के रहनुमा उसूल	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी रह0	10
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	13
शरई क़ानून और इंसानी क़ानून	मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी	14
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	16
हमारा देश	मुबीन अहमद फतेहपुरी	19
चँद्रयान–3 दिखा रहा	इं0 जावेद इक़बाल	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	23
मेरा रोना नहीं, रोना है यह सारे	जमाल अहमद नदवी	24
दौलत से बड़ी इज़्ज़त	नज़्मुस्साक़िब अब्बासी नदवी	26
हमें ज़मीं के मसायल पे बात	मुहम्मद नस्रुल्लाह नदवी	27
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	29
मुहम्मद सल्ल0 के चार यार	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	31
उम्मुल मोमिनीन	सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी	32
मुबारक और मनहूस की कल्पना	मौलाना मो0 ख़ालिद नदवी गाज़ीपुरी	35
नदवा परिसर में इल्मी व दीनी	इदारा	37
वतन की फिक्र कर नादाँ	नौशाद खान	38
स्वास्थ्य	डॉ चारू गाबा	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात की खिदमत में	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-हूदः-

अनुवादः—

उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर मैं अपने पालनहार की ओर से खुले प्रमाण पर हूँ और मुझे उससे रहमत मिलती है फिर अगर मैं उसकी अवज्ञा करूँ तो कौन मुझे उससे बचाएगा तो सिवाय घाटा पहुँचाने के और तुम मुझे क्या दोगे(63) और ऐ मेरी क़ौम! यह ऊँटनी अल्लाह की तुम्हारे लिए एक निशानी है, तो इसे छोड़े रखो अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरे और इसको कोई तकलीफ़ मत देना वरना जल्द ही तुम्हें अज़ाब आ पकड़ेगा(64) बस उन्होंने उसके पांव काट डाले तो (सालेह ने) कहा अपने घरों में तीन दिन मज़े कर लो, यह वादा है जिसमें ज़रा झूट नहीं(65) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने सालेह को और उनके साथ ईमान लाने वालों को अपनी कृपा से बचा लिया और उस दिन के अपमान से भी (सुरक्षित रखा) बेशक आपका पालनहार शक्तिमान है ज़बरदस्त है(66) और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने दबोच लिया तो वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गये(67) मानो वे वहां कभी बसे ही न थे, सुन लो! समूद ने अपने पालनहार का इनकार किया, सुन लो! समूद को धित्कार दिया गया[1](68) और हमारे भेजे हुए फरिश्ते इब्राहीम के पास शुभ समाचार ले कर पहुँचे, उन्होंने सलाम किया (उत्तर में) उन्होंने कहा तुम पर भी सलाम! फिर जल्दी ही एक भुना हुआ बछड़ा ले आए(69) फिर जब उन्होंने देखा कि उनके हाथ उधर बढ़ ही नहीं रहे हैं तो उनको उनसे वहशत सी हुई और उनसे कुछ डर महसूस हुआ, वे बोले आप घबराएं नहीं हम लूत की क़ौम की ओर भेजे गए हैं(70) और उनकी पत्नी खड़ी थीं तो वे हसीं, फिर हमने उन्हें इस्हाक़ का शुभ समाचार सुनाया और इस्हाक के पीछे याक़ूब का(71) वे बोलीं हाय ख़ाक पड़े! क्या मैं बच्चा जनूँगी और मैं बुढ़िया और यह मेरे मियाँ भी बूढे, यह तो बड़ी ही आश्चर्यजनक बात है[2](72) उन्होंने कहा कि आपको अल्लाह के आदेश पर आश्चर्य है, ऐ घर वालो! तुम पर तो अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हैं बेशक वह हर प्रशंसा का हक़दार बड़ी शान वाला है(73) फिर जब इब्राहीम का डर समाप्त हुआ और शुभ समाचार भी मिल गया तो वे हम से लूत की क़ौम के बारे में बहस करने लगे(74) बेशक इब्राहीम तो बड़े सहनशील, बड़े कोमल हृदय वाले, बड़े अल्लाह की ओर झुकने वाले थे(75) ऐ इब्राहीम! इसको छोड़ो, यह तो तुम्हारे पालनहार का फैसला आ चुका और उन पर तो अज़ाब आकर रहेगा वह लौटने वाला नहीं[3](76) और जब हमारे दूत लूत के पास पहुँचे तो उनका आना अच्छा न लगा और उन्होंने कुढ़न महसूस की और कहा आज का दिन बड़ा कठिन है(77) और उनकी क़ौम के लोग उनके पास भाग—भाग कर पहुँचे और पहले भी वह बुराइयां करते रहे थे (लूत ने) कहा ऐ मेरी क़ौम! यह मेरी बेटियां हैं, यह तुम्हारे लिए अधिक पाक हैं तो अल्लाह से डरो और मेरे मेहमानों के सिलसिले में मुझे अपमानित न करो, क्या तुम में

कोई भी भला आदमी नहीं है(78) वे बोले कि तुम जानते हो कि तुम्हारी बेटियों का हमें कुछ दावा नहीं और तुम तो जानते ही हो जो हम चाहते हैं(79) उन्होंने कहा काश कि तुम पर मेरा कुछ ज़ोर होता! या मैं किसी मज़बूत आश्रय की शरण लेता(80) उन्होंने कहा ऐ लूत! हम आपके पालनहार के दूत हैं, यह आप तक हरगिज़ न पहुँच सकेंगे तो आप रात के किसी भाग में अपने घर वालों को ले कर निकल जाइए और आप में से कोई पीछे पलट कर न देखे सिवाय आपकी पत्नी के, वह भी उसी अज़ाब का शिकार होगी जिस अज़ाब का यह शिकार होंगे, सुबह का समय इनके लिए निर्धारित है, और सुबह में अब देर ही क्या है[4](81)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. समूद क़ौम की ओर जिसको दूसरा आद भी कहा जाता है हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम भेजे गए, जब उन्होंने शिर्क करने से मनाही की तो समूद क़ौम दुश्मन होगई और यूं कहा कि तुमसे बड़ी आशाएं थी सब तुमने मिट्टी में मिला दी, फिर उन्होंने निशानी की मांग की, अल्लाह ने एक ऊँटनी निकाल दी जो विशाल काया वाली थी और आदेश हुआ कि उसके चरने का और पानी पीने का एक दिन निर्धारित होगा, उस दिन अन्य जानवर घाट पर नहीं आएंगे और उसको छोड़े रखा जाए जहाँ चाहे खाए–पिये, कोई ज़रा भी उसको हाथ न लगाए, यह बात क़ौम को बर्दाश्त न हुई और एक अभागे ने उसको मार डाला, बस फिर वे अज़ाब का शिकार हुए, एक ज़बरदस्त चिंघाड़ थी उसके साथ अजीब सी कपकपी छाने लगी और सब पड़े के पड़े रह गए।

2. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मेहमानों की बड़ी इज़्ज़त करने वाले थे, मेहमानों को देख कर व्यवस्था में लग गए, भुना हुआ बछड़ा सामने ला कर रखा, जब देखा कि वे खाते ही नहीं तो परेशान हुए, फिर जब मालूम हुआ कि फ़रिश्ते हैं तो संतोष हुआ और धर्म पत्नी भी खुश हुईं और हंस दीं, फिर फरिश्तों ने संतान का शुभ संदेश दिया।

3. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बड़े कोमल हृदय वाले थे, उन्होंने हज़रत लूत की क़ौम के लिए कुछ और मोहलत चाही, वे अल्लाह के बड़े लाडले पैग़म्बर थे, प्रेम से परिपूर्ण शैली में उसका उत्तर दिया गया, "इब्राहीम! यह सब छोड़ो अल्लाह का निर्णय आ चुका अब इसमें परिवर्तन नहीं हो सकता"।

4. हज़रत लूत की क़ौम दुराचार और समलैंगिकता में लिप्त थी, जब हज़रत लूत के पास फरिश्ते सुन्दर नवयुवकों के रूप में आए तो क़ौम के बुरी प्रवृत्ति के लोग पहुँच गये, हज़रत लूत घबराए कि उनकी क़ौम के लोग उनके मेहमानों को वासना का निशाना न बनाएं, चूंकि वहां उस समय उनकी क़ौम के लोग नहीं थे इसलिए घबराहट में उनकी ज़बान से यह शब्द निकले कि मुझे कोई मज़बूत आसरा मिल जाता, उन्होंने समझाने का प्रयास किया कि हमारी क़ौम की बेटियाँ तुम में मौजूद हैं जो हमारी बेटियों ही की तरह हैं, तुम प्राकृतिक रूप में अपनी इच्छा पूरी कर सकते हो वे तुम्हारी विवाहित पत्नियाँ हैं, फिर फरिश्तों ने सूचित किया कि हम अल्लाह के दूत हैं। आज़ाब लेकर आये हैं, वे हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, आप अपने परिवार को लेकर रतों–रात निकल जाएं, सुबह होते ही अज़ाब उन पर आ जाएगा, उनकी पत्नी काफ़िर थी इसलिए बता दिया गया कि वह काफ़िरों में ही रह जाएगी और बार्बाद हो जाएगी।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

रिश्तों और नातों को जोड़े रखने का बयान

रिश्ता जोड़ना और तोड़नाः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः अल्लाह तआला ने सृष्टि को पैदा किया, जब उस से फारिग हुए तो रिश्ते ने कहा क्या रिश्ता काटने से पनाह माँगने की जगह यही है? अल्लाह तआला ने फरमायाः हाँ। क्या तू इस बात से राज़ी नहीं है कि तुझे जो जोड़े उसे मैं जोड़ूँ और जो तुझे काटे मैं उसे काट दूँ। रिश्ते ने कहा हाँ, अल्लाह तआला ने फरमाया बस यह तेरे लिए है। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः अगर तुम चाहो तो इस आयत का अनुवाद पढ़ो ''क्या यह सम्भव है कि जब तुमको हुकूमत और मौक़ा मिले तो तुम ज़मीन पर फसाद और बिगाड़ फैलाओ और अपने रिश्तों को काटो, वही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लअनत की और उन्हें अन्धा और बहरा बना दिया।

(सूरः मुहम्मद आयत—20—23)। (बुखारी मुस्लिम)।

जो रिश्ता तोड़ेगा अल्लाह उसे तोड़ेगाः—

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— रिश्ता अर्श से जुड़ा हुआ है और कहता है— जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसे जोड़ेगा और जो मुझे काटेगा अल्लाह उसे काटेगा।

(बुखारी व मुस्लिम)

रिश्ता तोड़ने का बदला रिश्ता जोड़नाः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 से एक आदमी ने कहा मेरे कुछ नातेदार हैं, मैं उनसे नाता जोड़ता हूँ और वो इसको तोड़ते हैं, मैं उनके साथ भलाई करता हूँ, वो मेरे साथ बुराई करते हैं, मैं उनको अपना समझता हूँ और वो मुझको गैर समझते हैं। आप सल्ल0 ने फरमाया— जैसा तुम कह रहे हो अगर सच है तो तुम उनके मुँह में मिट्टी भरते हो और जब तक तुम इस पर जमे रहोगे अल्लाह की मदद बराबर तुम्हारे साथ रहेगी। (बुखारी व मुस्लिम)

बदला देने वालों को रिश्ता जोड़ने वाला नहीं कहा जाएगाः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल—आस रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— बदला देने वाला रिश्ता जोड़ने वाला नहीं है, रिश्ता जोड़ने वाला वह है कि उससे रिश्ता तोड़ा जाए और वह उसको जोड़े। (बुखारी)

नाता और रिश्ता जोड़ने का महत्वः—

हज़रत अबू अय्यूब (खालिद बिन ज़ैद अन्सारी) से रिवायत है कि एक आदमी ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0 मुझे ऐसा अमल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में लेकर चला जाए और दोज़ख से दूर कर दे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को साझी न करो, नमाज़ अदा करो, ज़कात दो और रिश्तों को जोड़ो।

(बुखारी व मुस्लिम)

❖❖❖

दुश्मनी लाख सही ख़त्म न कीजिए रिश्ता
दिल मिले ना मिले हाथ मिलाते रहिए
(निदा फाज़ली)

सम्पादकीय

ईमान की वास्तविकता

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

ईमान का शब्द विभिन्न प्रकार से हम प्रयोग करते हैं ईमानदार, ईमानदारी, ईमान की बात आदि, ईमान का शाब्दिक अर्थ विश्वास और सच्चाई के हैं, दीन की परिभाषा में अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अल्लाह की अन्तिम किताब कुर्आन शरीफ़ द्वारा जो बातें बताई गई हैं उन पर दिल से यकीन करने, ज़बान से इकरार करने और उन पर विश्वास करने और सच समझने का नाम ईमान है। क्रमानुसार यह बातें हमें ''कलिम–ए–ईमान मुफस्सल'' में बताई गईं हैं, उस कलिमे का अनुवाद प्रस्तुत है– ''ईमान लाया मैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर और उसके अन्तिम दिन पर और अल्लाह की ओर से क़िसमत के अच्छे और बुरे होने पर और बाद मरने के उठाए जाने पर, इस कलिमे के प्रत्येक अंश पर ईमान लाना अनिवार्य है, यदि कोई व्यक्ति एक अंश पर ईमान लाता है और दूसरे अंश को नकारता है, तो वह ईमान वाला नहीं कहलायेगा अर्थात मोमिन नहीं होगा, और ईमान से ख़ारिज हो जाएगा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अपने ईमान को ताज़ा करने के लिए ''कलिम–ए–तय्यिबा'' को बराबर पढ़ते रहा करो, ''ईमान मुफ़स्सल'' जिसका अनुवाद ऊपर दिया गया है उसका उल्लेख आप को कुर्आन में कई जगह मिलेगा, उसका संदर्भ निम्नलिखित है– सूरः बक़रह 177, 285 सूरः निसा–136, क्रमानुसार ईमान के इस समूह को अक़ीदा या ''अक़ाइद'' कहते हैं। इस्लाम में अक़ाइद को बुनियादी हैसियत हासिल है, अक़ाइद अगर दुरुस्त न हों तो बड़े–बड़े काम बेहैसियत हो कर रह जाते हैं और आदमी मुसलमान बाक़ी नहीं रह जाता, अक़ाइद में भी सबसे अहम और बुनियादी अक़ीदा तौहीद का है जिस का अर्थ अल्लाह को एक जानना और एक मानना है, बाकी अक़ाइद इसी अक़ीद–ए–तौहीद से निकलते हैं, अक़ीद–ए–तौहीद की दुरुस्तगी और सुधार से बक़िया अक़ाइद की दुरुस्तगी आसान हो जाती है।

अब आइए ''ईमान मुफ़स्सल'' के पहले अंश पर ''ईमान लाया मैं अल्लाह पर, अल्लाह पर विश्वास करना और उसको उसी प्रकार मानना जैसा कि उसके विषय में उसके नबियों ने बताया, उसको अल्लाह पर ईमान लाना कहते हैं, कुर्आन शरीफ़ अल्लाह की अन्तिम और परिपूर्ण किताब है जिसमें अल्लाह की विशेषताएं बयान की जाती हैं तो कुरआन शरीफ उसको खोल कर बयान करता है, ''सूरः हश्र'' की अन्तिम आयतें उसकी खुली मिसाल हैं, कुर्आन कहता है वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, हर गुप्त और खुले का जानने वाला है, वही रहमान (बड़ा मेहरबान) और रहीम (अति दयालू) है वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई पूजा के योग्य नहीं जो सम्राट है, पवित्र है, सर्वथा सलामती है, शान्ति प्रदान करने वाला है, सबका संरक्षक है, प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) है, ज़बरदस्त है, बड़ाई का मालिक है, अल्लाह उनके हर प्रकार के शिर्क से पाक है, वही अल्लाह है जो पैदा करने वाला है, वजूद प्रदान करने वाला है, रूप देने वाला है, उसके अच्छे अच्छे नाम हैं उसी की तस्बीह में लगे हैं जो भी आसमानों और ज़मीन में है।

और वही ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है, हिकमत वाला है—

अल्लाह अपनी इन विशेषताओं और अपनी जात में तनहा और अकेला है, उसके जैसा कोई नहीं, संसार का कंण कण पुकार पुकार कर कहता है कि इन समस्त चीज़ों का एक पैदा करने वाला है, सारा प्रबंध और व्यवस्था उसी के हाथ में है वह जिस प्रकार चाहता है, रद्दो बदल करता है उसके अच्छे अच्छे नाम हैं उन नामों से उसको पुकारा जाए केवल उस की बन्दगी की जाए, इबादत के सारे आमाल उसी के साथ विशेष हैं, किसी को इबादत में उसके साथ साझीदार न बनाया जाए, केवल उसी के आगे सर झुकाया जाए और उसी को कठिनाइयों को दूर करने वाला और ज़रूरतों को पूरा करने वाला समझा जाए।

अल्लाह तआला ने दुनिया बनाई है और उसमें इंसान को बसाया और आबाद किया है हज़रत आदम अलैहिस्सलाम सबसे पहले इंसान हैं जिनको उनकी बीवी हज़रत हव्वा के साथ दुनिया में आसमान से उतारा गया और यह कह दिया गया कि तुम और तुम्हारी औलाद जब तक एक अल्लाह को मानती रहेगी, उसकी इबादत करती रहेगी और उसके बताये हुए रास्ते पर चलती रहेगी उस वक़्त तक कामयाब होती रहेगी और जब वह उस रास्ते से हटेगी, अल्लाह के अलावा दूसरों को पूजने लगेगी तो उसका ठिकाना जहन्नम होगा।

शैतान जो इंसान का खुला दुश्मन है उसने अल्लाह से अनुमति ली है कि मैं इंसान को बहकाऊँगा, और उसको ग़लत रास्ते पर डालने की हर संभव प्रयास करूँगा अल्लाह ने फ़रमाया कि जा तुझे जो प्रयत्न करना हो कर, मेरे विशेष बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं चलेगा, उस दिन से शैतान की सबसे बड़ी कोशिश यही है कि वह इंसान को शिर्क अनेकश्वरवाद में फँसा कर एक अल्लाह की बन्दगी से हटा दे, इसलिए कि यही इंसान की सबसे बड़ी गुमराही (पथ भ्रष्टता) है कि वह अपने पैदा करने वाले के अधिकार को भूल जाए, और शिर्क व कुफ्र में ग्रस्त हो कर सदैव के लिए जहन्नम का ईंधन बने।

अल्लाह ने इंसानों पर यह बड़ा एहसान और उपहार है कि उसने हमेशा बन्दों को उचित रास्ते पर लाने के लिए और एक अल्लाह की बन्दगी में प्रवेश करने के लिए हर ज़माने में रसूल भेजे, हर रसूल की दअ़वत यही थीः—

''उस एक अल्लाह के अलावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं''

(अल आराफ—58)

उन रसूलों में सबसे अन्तिम और सर्वश्रेष्ट हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पूरी दूनिया के लिए और क़यामत तक के लिए भेजा गया, जिस समय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये उस समय मक्के के मुश्रिक एक अल्लाह को मानते तो थे लेकिन उसके साथ सैकड़ों ख़ुदाओं को शरीक करते थे, उनकी पूजा करते थे और उन पर चढ़ावा चढ़ाते थे, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर प्रकार के शिर्क को नकारा है और उसको सबसे बड़ा गुनाह क़रार दिया है और क़ुर्आन शरीफ़ में साफ़—साफ़ ऐलान कर दिया गया ''अल्लाह इसको माफ़ नहीं करता कि उसके साथ साझीदार बनाया जाए, और उसके अलावा जिसको चाहेगा माफ़ कर देगा।

(सूरः अन्निसा आयत नं0 116)

ख़ुदा एक है दिल से जानों यक़ीं।
सिवा उसके माबूद कोई नहीं।।
हर इक शै पे हाकिम है क़ादिर है वह ।
हर इक जा पे हाज़िर है नाज़िर है वह।।

❖❖❖

दीनी दावत के रहनुमा उसूल

हजरत मौ0 सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह0

इस्लामी दावत का उसूल यह है कि आप बात करने का ऐसा तरीक़ा अख़्तियार करें जिसके बाद इन्सान यह कहने पर मजबूर हो जाए कि उनकी बात सही और मअकूल है। इन्सान के इस अंदाज़ का बहुत असर पड़ता है। आप सामने वाले से जिस अंदाज में कोई बात कहेंगे उस पर वैसा ही असर पड़ेगा। अगर आप सामने वाले से कोई बात जीतने के अंदाज़ में कहेंगे तो उस पर कोई खास असर नहीं होगा। लेकिन अगर आप उससे हमदर्दी के लहजे में बात करेंगे और उसके लिए अपने दिल में तड़प रखेंगे तो उस पर आप की बात का गहरा असर पड़ेगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाल यह था कि आप लोगों के लिए तन्हाई में तड़पते थे। यह सोचते थे कि लोग जहन्नम में जाएंगे, उनको किसी तरह पकड़ कर रोक लूं कि यह जहन्नम से बच जाएं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी एक मिसाल भी दी कि हमारी मिसाल ऐसे ही है जैसे आग जल रही हो, लोग उसमें गिरे जा रहे हों और हम उन लोगों की कमर पकड़–पकड़ कर उस आग से हटा रहें हैं कि भाई आग में न जाओ। मानो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस मिसाल से उम्मत को यह समझा रहे हैं कि लोगों को जब दावत दी जाए तो दिल में इस क़िस्म की कुढ़न होनी चाहिए कि तुम देख नहीं रहे हो आगे गहरा गढ़ा है, तुम उसमें गिर जाओगे। इसमें सोचने की बात यह है कि आदमी अपने लिए नहीं तड़प रहा है बल्कि सामने वाले से कह रहा है और उसकी भलाई के लिए कह रहा है। अब वह उससे जिस अंदाज़ में कहेगा उसी अंदाज़ में हमदर्दी होगी। ज़ाहिर बात है कि इस अंदाज़ में धमकी नहीं है कि भाई आगे गढ़ा है देखो गिर न जाना। अगर कोई यह अंदाज़ अख़्तियार करे तो सुनने वाला समझ लेगा कि यह हमारी हमदर्दी में कह रहा है, हमको बचाना चाहता है। कुरआन में बात करने का यही अंदाज़ सिखाया गया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कलाम का अंदाज़ भी मुहब्बत से भरा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस तरह मुहब्बत से बात करते थे और जिस तरह लोगों को मुतवज्जे करते थे, बस दिल में बात उतर जाती थी जबकि उस वक़्त एक मिली जुली सोसाइटी थी। कुछ लोग मुसलमान हो गए थे और कुछ मुसलमान नहीं हुए थे कुछ मुख़ालिफ थे कुछ मुआफ़िक़ थे लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा यह था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे मुहब्बत से बात करते थे और इसका नतीजा यह होता था कि जिसने एक मर्तबा आपकी बात सुन ली और आपसे मिल लिया वह यही कहता कि यह मुख़ालिफ़त वाले आदमी नहीं है।

हम और आप एक ऐसे मुल्क में रहते हैं जहाँ मुख़्तलिफ़ तबक़ात के लोग आबाद हैं और मुख़्तलिफ़ तबीयतों के लोग हैं। इसमें मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम का फ़र्क न भी किया जाए तब भी यह बात तय है कि लोगों की तबीयतें अलग–अलग होती हैं। तबीयत सबकी एक नहीं होती। लिहाज़ा अगर हम एक तबीयत समझ करके सबसे बात करेंगे तो उसका नुक़सान होगा। हर शख़्स की तबीयत उसके माहौल

से बनती हैं माहौल का बहुत असर पड़ता है। हम सब अपने माहौल के बने हुए हैं। ऐसा नहीं है कि इस्लाम हमारे सामने रखा गया और हमने कुबूल कर लिया बल्कि हम सब अपने माहौल के एतबार से बने हुए हैं और अगर आप माहौल को तब्दील करेंगे तो जिस माहौल को कुबूल करेंगे उसकी क़द्र करते हुए उसको कुबूल करेंगे लिहाज़ा आप एक ऐसा माहौल बनाएं जिसमें इस बात पर ख़ास तवज्जो दी जाए कि हमको सबसे मुहब्बत से मिलना है। सबसे हमदर्दी से बात करना है। सबको यह दिखाना है कि हम तुम्हारे लिए एक भाई की तरह हैं। हम तुम्हारे सच्चे हमदर्द हैं। हम तुम्हें चाहते हैं कि तुम नुक़सान से बच जाओ। हम चाहते हैं कि तुम आराम की ज़िन्दगी गुज़ारो, तुम्हें किसी तरह की कोई तकलीफ़ न हो। तुमको परेशानी न हो, इसलिए कि इन्सानी ज़िन्दगी में परेशानियां बेशुमार हैं। यह ज़िन्दगी अजीब व गरीब ज़िन्दगी है। अल्लाह तआला ने हमको यह ज़िन्दगी इम्तिहान के लिए दी है। इसमें हर आदमी को तरह–तरह के हालात पेश आते हैं और वह हालात ऐसे होते हैं जिनका तअल्लुक़ किसी मज़हब से नहीं बल्कि इन्सानी ज़िन्दगी से होता है। इस दुनिया में जो इन्सान भी ज़िन्दा है तो उसके साथ यह बात लगी हुई है कि परेशानियां आएंगी और उनको दूर करने की तदबीरें अख़्तियार की जाएंगी। अब जो शख़्स भी किसी की परेशानी दूर करने की कोशिश करेगा, वह उस परेशन हाल के नज़दीक़ महबूब हो जाएगा। लिहाज़ा अगर आप किसी परेशान शख़्स से हमदर्दी से बात कर लीजिए तो उसका दिल आपसे खुश हो जाएगा और ऐसे मौक़े पर मसला किसी ख़ास नज़रिये या मजहब का नहीं होता बल्कि मसला इन्सानी हमदर्दी का होता है, इन्सानी ताल्लुक़ का होता है कि हम सब इन्सान हैं। तो इन्सान होने की हैसियत से एक दूसरे से ताल्लुक़ रखें। इन्सान इन्सान है, जानवर नहीं है कि हम उसके साथ जानवरों जैसा मामला करें। ज़ाहिर है कि हम इन्सान के साथ इन्सान जैसा मामला करेंगे यानि भाई जैसा, हम उससे कहेंगे कि भाई तुमको भी ज़िन्दा रहने का हक़ है, हमको भी ज़िन्दा रहने का हक़ है, तुम भी अच्छी तरह ज़िन्दगी गुज़ारो, हम भी आराम से ज़िन्दगी गुज़ारें।

दावत की राह में उक्त अंदाज़ दूसरे को दोस्त और अपना हमदर्द बनाने का बेहतरीन तरीक़ा है। इसका जितना असर पड़ता है उतना असर दलाएल से नहीं पड़ता है और बहस का भी असर नहीं पड़ता है बल्कि इसका उल्टा असर पड़ता है। सालों पहले हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में बहुत मुनाज़रे होते थे, खुद हम भी बहुत से मुनाज़रों में शरीक हुए और हमने वहां यह देखा कि दोनों तरफ़ से यह कोशिश होती है कि हम ही जीतें और नतीजा यह होता है कि दोनों जीतते हैं और दोनों हारते हैं, कभी–कभी एक दूसरे को बुरा कहने और ग़लती निकालने की नौबत आ जाती है, लेकिन उस प्रोग्राम से कोई ख़ातिरख़्वाह हल नहीं निकलता, इसलिए कि ज़ोर–ज़बरदस्ती से किसी बात को मनवाना मुश्किल है। इसके मुक़ाबले में मुहब्बत व हमदर्दी के साथ पेश आने का इन्सान पर जो असर पड़ता है वह ग़ैर मामूली होता हैं अगर किसी अस्पताल में डॉक्टर हमदर्दी के साथ दवा देता है और मुहब्बत के साथ इलाज करता है तो मरीज का आधा मर्ज़ ख़त्म हो जाता है, लेकिन अगर डॉक्टर ने साफ़–साफ़ जुम्लों में बात की तो मरीज़ का दिल टूट जाता है। उसको अगर कल मरना है तो वह आज ही मर जाएगा। इसी तरह जो शख़्स मरीज़ की मदद करे, मरीज़ के साथ हमदर्दी करे और उसको कुछ दे–दिलाए तो इस अमल से यक़ीनी तौर पर मरीज़ बेहद मुतअस्सिर होगा। इसी तरह

जो शख़्स मुसीबत में हो, वह इस बात के लिए बिल्कुल बेताब हो कि कोई हमारी मदद करे, हमारी तकलीफ़ दूर करे, तो अगर उसका यह मुतालबा जो दिल का मुतालबा है पूरा हो जाए तो बिला शुब्हा वह आपका दीवाना हो जाएगा और फिर वह ज़िन्दगी भर आपको याद रखेगा कि यह फलां साहब हैं जो मुसीबत के मौक़े पर हमारे काम आए थे। चाहे कोई भी शख़्स उसकी बात को बिल्कुल न माने लेकिन हम एतराफ़ करेंगे कि यह हमारे फ़लां मौक़े पर काम आए थे। जब हमें परेशानी थी तब यह हमारे काम आए थे। फिर वह जब भी आपसे मिलेगा उसी जज़्बे से मिलेगा कि उन्होंने आड़े वक़्त हमारी मदद की थी और मुश्किल वक़्त में हमारे काम आये थे।

मुसलमान को अल्लाह तआला ने ऐसे ही अख़लाक़ का हुक्म दिया है और इसीलिए इस्लाम का नाम ''सलम'' रखा है। इस्लाम के माने हैं अपने को अल्लाह तआला के हवाले कर देना और उसके दूसरे माने ''सिलम'' के भी हैं, इसको अल्लाह तआला ने ''सिलम'' भी कहा है। ''सलम'' के माने अमन के हैं, यानि जो मुसलमान हैं वह अमन क़ायम करने वाला है। मुसलमान वह है जिसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया है कि अल्लाह जो चाहेगा वह हम करेंगे। हम अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं करेंगे। इसको ''इस्लाम'' कहा गया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ''मुसलमान'' नाम रखा है। गोया हमें यह सिखाया गया है कि हम दूसरे को फ़ायदा पहुँचाने वाले हैं। अमन क़ायम करने वाले हैं। दूसरों की हमदर्दी करने वाले हैं। सिर्फ़ यही नहीं कि इबादत कर ली और फ़ारिग़ हो गए। इबादत का तअल्लुक़ अल्लाह तआला से है, इन्सानों से नहीं है। आप जब भी इबादत करेंगे तो वह इबादत अल्लाह तआला के यहां कुबूल होगी। लेकिन जहां मामला इन्सानों से तअल्लुक़ का है, वहां यह देखा जाएगा कि उनका मामला लोगों के साथ अच्छा है या नहीं? ◆◇◆

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हों, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

पिछले अंक से आगे

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

आलमे बरज़ख़:–

मरने के बाद कयामत से पहले जो चरण है वो आलमे बरज़ख़ कहलाता है, बरज़ख़ के मायने हैं बीच की चीज, जो दो चीजों के बीच में आती है, और पर्दा बन जाती है, दुनिया और आखिरत के दरम्यान का अंतराल है, इसी लिए इसको बरज़ख़ कहते हैं, सूरः मोमिनून में इसका जिक्र मिलता है, इरशाद होता है–

अनुवादः– *''और उनके पीछे एक पर्दा है, उस दिन तक जब वो उठाए जाएंगे।''*

(अल–मोमिनूनः100)

मरने के बाद इंसान इस चरण में जहां भी होता है उसको कब्र कहते हैं, चाहे वो मिट्टी के अंदर हो, समन्दर या दरया के दरम्यान हो, या किसी जानवर के पेट में इंसान मरने के बाद जहाँ कहीं भी उसको जला कर उसकी राख को समन्दरों दरयाओं या सूखी जगह में कहीं भी उड़ाया गया हो, उसको किसी जानवर ने खा लिया हो वही उसके लिये कब्र है, अल्लाह तआला उसको वहाँ से कयामत के दिन उठा कर खड़ा कर देगा।

अनुवादः– *''और अल्लाह उन सब को उठाएगा जो कब्रों में हैं।'' (अल–हजः 7)*

इस आलमे बरज़ख़ को मानना भी आखिरत पर ईमान लाने का हिस्सा है, इस परदे के हटते ही कयामत बरपा हो जाएगी, जिसको इस्लामिक परिभाषा में ''बास बादल मौत'' कहते हैं, फिर हिसाब व किताब के बाद जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे।

इस मध्यकालीन चरण (आलमे बरज़ख़) की राहत या तकलीफ का जिक्र कुरआन की आयतों और हदीसों में बहुत मिलता है, कुरआन मजीद में फिरऔनियों के बारे में आलमे बरज़ख़ के अजाब का तजकिरा बहुत साफ साफ मौजूद है, इरशाद होता है–

अनुवादः– *''और फिरौन वालों पर बुरी तरह का अजाब टूट पड़ा, वो आग है जिसपर सुबह और शाम उनको तपाया जाता है और जिस दिन कयामत आएगी (कहा जाएगा कि) फिरऔन के लोगों को बहुत ही सख़्त अजाब में दाखिल कर दो।'' (अल–गाफिरः 45–46)*

ये तकलीफ या राहत मौत के वक्त ही से शुरू हो जाती है, कई आयतों में इसका जिक्र है, एक जगह इरशाद है–

अनुवादः– *''और आप देख लें जब ये ना इन्साफ मौत की कठिनाइयों में होंगे और फरिश्ते हाथ फैलाए (कहते) होंगे कि निकालो अपनी जान आज तुम्हें अपमानित करने वाला अजाब दिया जाएगा इसलिए कि तुम अल्लाह पर झूठी बात कहते थे और उसकी निशानियों को मानने से अकड़ते रहते थे, और अब एक एक कर के हमारे पास पहुँच गए जैसे पहली बार हमने तुम्हें पैदा किया था और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा वो सब कुछ पीछे छोड़ आए और हमें तुम्हारे साथ वो सिफारिशी भी नज़र आते हैं जिनके बारे में तुम्हारा खयाल ये था कि वो तुम्हारे मामलात में (हमारे) शरीक हैं, तुम आपस में टूट कर रह गए और तुम जो वादे किया करते थे वो सब तुम से हवा हो गए।''*

(अनआमः 93–94)

❖❖❖

शरई क़ानून और इंसानी क़ानून में अन्तर

मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी

शरई कानून और दूसरे कानूनों में तीन मूल अंतर हैं– पहला अंतर ये है कि शरई कानून में कानून का स्रोत खुद अल्लाह तआला है, दूसरे क़ानूनों में खुद इंसान की बुद्धि और इच्छा को कानून का स्रोत माना गया है, दूसरा अंतर ये है कि शरई कानून मानवीय प्रकृति पर आधारित है न कि मानवीय इच्छा पर, और प्रचलित कानूनों की बुनियाद मानवीय इच्छा पर है, तीसरा अंतर ये है कि शरीयत में असली महत्व न्याय की है, यानी सभी वर्गों के साथ न्याय किया जाए, कभी समानता और बराबरी इन्साफ़ की मांग होती है, उस वक्त बराबरी भी जरूरी होगी, और कभी इन्साफ़ का तकाज़ा होता है कि सारे लोगों पर बराबरी के साथ लागू न किया जाए, बल्कि फर्क के साथ उसको लागू किया जाए, ऐसे अवसर पर शरीयत समानता के बजाए इन्साफ का रास्ता अपनाती है।

उन में से पहले बिंदु का विवरण ये है कि कुरआन मजीद ने बार बार कहा है कि इंसानी जिन्दगी की समस्याओं के बारे में फैसला करना अल्लाह तआला का ही हक है।

अनुवादः– *''फैसला तो सिर्फ अल्लाह ही का है'' (अनआम–75)*

जो फैसला अल्लाह तआला ने कर दिया है, वो सच्चाई और इन्साफ पर आधारित है, अब उस में कोई तब्दीली नहीं हो सकती।

अनुवादः– ***''और आपके रब का फैसला सच्चाई और न्याय के ऐतबार से मुकम्मल हो चुका है, उसके फैसलों में कोई तब्दीली हो ही नहीं सकती और वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।''*** *(अनआम–115)*

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मक्के के मुशरिको ने मांग की थी कि आप इस कुरआन के बजाए कोई दूसरा कुरआन ले आएं, या इस में कुछ तब्दीलियां कर दीजिए, अल्लाह तआला ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बाने मुबारक से कहलवाया कि खुद मुझ को भी इसमें किसी तब्दीली का हक नहीं है। जो हुक्म कुरआन मजीद में ऐसे साफ साफ शब्दों में आया हो कि उसमें किसी दूसरे मायने की गुंजाइश न हो, या ऐसी विश्वसनीय हदीस में आया हो जिसके साबित होने में कोई शक न हो वो कतई है, और उस में कोई तब्दीली नहीं हो सकती हाँ जिस हुक्म की बुनियाद किसी खास जमाने की मस्लेहत पर हो, जो बाद में बदल गई हो तो उस हुक्म में बदलाव हो सकता है, या किसी खास जमाने के रीती पर हो या रिवाज की वजह से दिया गया हो, या जिस हुक्म की कुरआन व हदीस में स्पष्ट रूप मौजूद न हो और वो इज्तिहादि (गौर व फिक्र वाला) मसला हो, जिसमें शरीयत के मिजाज को सामने रख कर गौर व फिक्र कर के कोई राय कायम की गई हो तो ऐसे हुक्मों में उम्मत के फकीह हज़रात सामूहिक ''इज्तिहाद'' के जरिये कोई तब्दीली कर सकते हैं, मगर ये हकीकत में तब्दीली नहीं होगी, बल्कि दो मायनों में से एक को वरीयता देना और अपने ज़माने के लेहाज से शरीयत के हुक्म को लागू करना होगा, इसकी बहुत सी मिसालें फिक़्ह की किताबों में मौजूद हैं, जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी चीज को अपने कब्जे में लेने से पहले उसको आगे बेचने से मना फरमाया।

(बुखारी, हदीस नंबर 2123)

शुरू ज़माने में किसी चीज़ को कब्ज़े में लेने का एक ही मतलब था और वो था उस चीज़ को महसूस तौर पर अपने कब्जे में ले लेना, लेकिन फिर ऐसी चीजें वजूद में आईं कि जिनका फिजिकल कब्जा दुश्वार था, तो कब्जे की हकीकत निर्धारित करने में मानवी कब्जे को भी शामिल किया गया है, यहाँ तक कि मौजूदा दौर में जब कि शेयर की बड़े पैमाने पर खरीद फरोख़्त होती है और सिवाए इसके कि खरीदार के एकाउंट में खरीदी हुई शेयर मात्र अंकित हो जाती है, सामान पर कब्जे की और कोई निशानी नहीं होती, तो मौजूदा दौर के उलमा ने रिस्क के स्थानांतरण को कब्जे के लिए काफी करार दिया, यानी जब शेयर खरीदार के एकाउंट में ट्रांस्फर हो जाए और कीमत बढ़ने का फायदा और कीमत गिरने का नुकसान उसको बर्दाश्त करना पड़े तो समझा जाएगा कि कब्जा हो गया, ये दर असल हुक्म में तब्दीली नहीं है, बल्कि किसी हुक्म को लागू करने में बदली हुई कार्यशैली को कुबूल करना है।

इसके खिलाफ दुनिया के प्रचलित कानूनों में कानून का स्रोत इंसान को करार दिया गया है, कहीं निरंकुश राजा या डिक्टेटर के हुक्म को कानून माना जाता है, कहीं जनप्रतिनिधियों के जरिये कानून बनाया जाता है, इन सभी सूरतों में इंसान को हक दिया गया है कि वो खुद अपने लिए कानून बनाए, इसलिए इंसान अपनी इच्छानुसार क़ानून बनाता भी है और क़ानून बदलता भी है कुरआन मजीद ने कहा कि कानून की बुनियाद सिर्फ इंसान की इच्छा को नहीं बनाया जा सकता।

अनुवादः– *"उनकी इच्छाओं पर न चलो।" (शूरा–15)*

ये बात कुरआन मजीद में कई स्थानों पर कही गई है।

(निसा –135)

अब गौर करने की बात ये है कि इन दोनों में से कौन सा दृष्टिकोण ज़्यादा सही है? गौर किया जाए तो कानून बनाने वाली अथार्टी के लिए दो बातें जरूरी हैं– एक ये कि वो जिन लोगों के लिए कानून बना रहा है, वो उनके फायदों और नुकसानों से पूरी तरह अवगत हो, दूसरे वह उन तमाम लोगों के साथ न्याय कर सकता हो, वो किसी एक गिरोह की तरफ झुकाव का शिकार न हो, वर्ण वो सारे लोगों के दरम्यान इन्साफ से काम नहीं ले सकता, वो बहुसंख्यक के हितों को आगे रखेगा, अपनी जातियों के फायदे को आगे रखेगा, और दूसरों को नजरअंदाज करेगा, ज्ञान और इन्साफ की ये पूर्णता ब्रह्माण्ड के रचियता के अंदर ही हो सकती है, क्योंकि जब उस ने इंसान को और उसके आस पास बिछे हुए ब्रह्माण्ड को पैदा किया है तो निश्चित रूप से वो इस बात से वाकिफ होगा कि इंसान के लिए कौन सी चीज़ और कौन सा अमल लाभदायक होगा, और इसके विरुद्ध कौन सी चीज और कौन सा अमल हानिकारक होगा, इसी तरह सभी इंसान उसके बंदे हैं और बंदा होने के लिहाज से सब बराबर हैं, इसलिए ब्रह्माण्ड के रचयिता के बारे में ये विश्वास किया जा सकता है कि उसका हुक्म इन्साफ और न्याय पर, सभी लोगों के फायदे और जरूरत के लेहाज पर निर्भर और निष्पक्ष होगा, अगर कानून की लगाम एक आदमी के हाथ में दी जाए तो इससे भी ज़्यादा नुकसान होगा, क्योंकि एक व्यक्ति ही नहीं बल्कि देश की बहुत बड़ी संख्या डिक्टेटर बन कर खड़ी हो जाएगी और वो अल्पसंख्यकों को पीस डालेगी, जिसकी बड़ी मिसाल इस वक़्त इस्राईल में देखी जा सकती है, और जिसके पदचिन्ह पर दुर्भाग्यवश हमारा देश भी आगे बढ़ रहा है, जहाँ सेना, न्यायलय, प्रशासन यहाँ तक कि मीडिया सभी को सरकार ने अपने जालिमाना पंजे में ले लिया है।

शेष पृष्ठ ...18....पर

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बरनी के भड़काऊ लेखः—

ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपने इतिहास फ़िरोज़शाही में उन हिन्दुओं के विरुद्ध बहुत ही कठोर और नापसंदीदा बातें लिखी हैं जो दिल्ली के सुल्तानों से युद्धरत थे और उनके विरुद्ध विद्रोही रवैया अपनाए हुए थे। इसके अतिरिक्त मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी के अपने कुछ व्यक्तिगत विचार थे जिनको वह विभिन्न शैलियों में व्यक्त करते रहे। उनके कुछ वाक्य और कथन ऐसे अवश्य हैं जिनको पढ़ कर ग़ैर मुस्लिमों की भावनाएं भड़कती हैं। लेकिन यह भड़काऊपन ऐसे ही लोगों में पैदा होता है जो कुरआन और सुन्नत के प्रकाश में इस्लामी शिक्षाओं का अध्ययन करना पसंद नहीं करते। यदि वह इन शिक्षाओं का गहन अध्ययन करें और उन्हीं के अनुसार किसी इतिहासकार या किसी शासक का बुरा कथन या कर्म पाएं तो उनका भड़काना उचित कहा जा सकता है। लेकिन किसी इतिहासकार या किसी शासक के कथन और कर्म को इस्लाम की शिक्षा समझ कर इस्लाम से द्वेष करना और फैलाना भलाई और नेक नियती का प्रमाण नहीं हो सकता। स्वच्छंद विचारों वाले इतिहासकारों, फ़क़ीहों और शासकों ने उस समय की आवश्यकताओं और राजकीय आवश्यकताओं के अनुसार इस्लामी क़ानून के अनुचित निष्कर्ष निकाले तो वह इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं नहीं कही जा सकती हैं।

ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपने इतिहास फ़िरोज़शाही में लिखा है कि अलाउद्दीन ख़िलज़ी ने क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन से शरीअत में हिन्दुओं की हैसियत के सम्बन्ध में पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि हिन्दुओं को अपमानित करके रखना दीनदारी या धर्म के अनिवार्य कामों में से है क्योंकि वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 के सबसे बड़े दुश्मन हैं। इसलिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल0 ने हिन्दुओं की हत्या करने, उनसे ग़नीमत का माल लूटने और उनको दास बनाने का आदेश दिया। कौन हिन्दू है जो इसको पढ़ कर भड़का न होगा। लेकिन यह तमाम काज़ी मुग़ीस की गढ़ी हुई बातें हैं जिसको नक़ल करके ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपनी और उनके चरमपंथी बल्कि टेढ़ेपन का सबूत दिया है। क्योंकि निम्नलिखित हदीस के बाद क़ाज़ी मुग़ीस की रिवायत को कोई कैसे स्वीकार्य समझ सकता है। जब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अब्दुल्लाह बिन अरकम को जिज़िया वसूल करने पर नियुक्त किया तो उनको बुला कर फ़रमाया, ''जान लो कि जो व्यक्ति ऐसे लोगों के साथ, जिनसे समझौता हुआ है अर्थात ज़िम्मी पर अत्याचार करेगा या उससे उसकी ताक़त से अधिक काम लेगा या उसको अपमानित करेगा या उससे कोई चीज़ उसकी इच्छा के बिना लेगा तो मैं क़यामत के दिन उसका दुश्मन बनूँगा''।

इस्लाम में मानव जाति के अधिकारों का पूरा ध्यान रखा गया है। हर हाल में न्यायपूर्ण व्यवहार का उपदेश दिया गया है। सूरः माइदा में है कि ''किसी क़ौम की दुश्मनी तुमको इस पर न उभार दे कि तुम न्याय न

करो, न्याय हर हाल में करो कि यह बात तक्वा अर्थात ईश परायणता से निकट है।'' (सूरः माइदा–20) बुखारी शरीफ की हदीस में है कि जो बन्दों पर दया नहीं करता उस पर अल्लाह दया नहीं करता। मुस्तदरक हाकिम में है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया, तुम ज़मीन वालों पर दया करो तो आसमान वाला तुम पर दया करेगा। कुरआन की व्याख्या की रिवायतों में है कि सहाबा जब धार्मिक मतभेद के आधार पर ग़रीब मुश्रिकों की सहायता करना बन्द करने लगे तो यह आयत उतरी कि उनको सन्मार्ग पर ले आना तेरे बस की बात नहीं। लेकिन अल्लाह जिसको चाहता है सन्मार्ग पर ले आता है और जो भलाई पर खर्च करो वह तुम्हारे ही लिए है। (सूरः बक़रा–37) मुस्नद अहमद में है कि आप सल्ल0 ने मुसलमानों को सम्बोधित करके फ़रमाया कि तुममें से कोई उस समय तक पूरा मोमिन नहीं होगा जब तक कि वह दूसरे लोगों के लिए वही पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है और जब तक वह आदमी से केवल अल्लाह के लिए प्यार न करे।

सारी मानवता के लिए हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की दया की शिक्षा के बावजूद ज़ियाउद्दीन बरनी ने हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काऊ बातें लिख कर उस ज़माने के इतिहास बल्कि इस्लाम को नुकसान पहुँचाया है लेकिन इस सम्बन्ध में यह लिखे बिना नहीं रहा जाता कि उस ज़माने के इतिहासकार और फ़क़ीह तो बहुत कुछ बातें अपनी नस्लीय श्रेष्ठता या विजय और दूसरों को अधीन बनाने के गर्व में कह गए जो उनको नहीं कहना चाहिए था और जिनसे वर्तमान समय के मुसलमानों को लज्जित होना पड़ता है। लेकिन इस बीसवीं सदी के इस प्रकाशपूर्ण युग में हिन्दुस्तान के कुछ इतिहासकार ऐसे भी हैं जो मध्य युग के सैनिक भेदभाव से भी अधिक आगे ले जाना चाहते हैं। जैसे आजकल के हिन्दुस्तान के सबसे बड़े इतिहासकार आर0सी0 मजूमदार समझे जाते हैं। वह हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ़ इण्डियन प्यूपिल, खण्ड–7 पृष्ठ–78 के प्राकथन में लिखते हैं–

''11वीं सदी की पहली चौथाई में हिन्दुस्तान के लिए एक दर्दनाक घटना घटित हुई और यह घटना ऐसी थी जिससे भविष्य में बुरे नतीजे पैदा हुए। इससे न केवल हिन्दुस्तान की दौलत और इन्सान की ताक़त जाती रही। बल्कि पंजाब में स्थायी रूप से पैर ज़माने का एक अवसर मिल गया। जहां से उनको देश के अन्दर के लिए एक राजमार्ग मिल गया। छः हिन्दू राजाओं ने मुसलमानों को पराजित किया और उनके आक्रामक युद्धों को रोका। उन्हीं राजाओं में से एक ने यह भी दावा किया है कि उसने म्लेच्छों अर्थात मुसलमानों को निकाल बाहर किया है ताकि आर्यवर्त का नाम पूरा–पूरा उस पर सच सिद्ध हो और यह आर्यों का आवास स्थान रहे। लेकिन इस तरह की राष्ट्रीय चेतना के उदाहरण कम मिलते हैं। इसलिए यह देख कर आश्चर्य होता है कि डींग हाँकने के बजाए हिन्दू राजाओं ने मिल कर इसकी कोशिश नहीं की कि वह तुर्क विजेताओं को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल दें। अपनी माँसपेशियों से काँटा निकाल फेंकने के बहुत से अवसर आए जबकि यह काम आसानी से हो सकता था...... लेकिन ताक़तवर हिन्दुस्तानी राजाओं ने 1.5 सदी तक ऐसे अवसरों से लाभ उठाने के बजाए अपने पड़ोसी राजाओं को हानि पहुँचा कर अपने शासन क्षेत्र की वृद्धि की चिन्ता में लगे रहे और उन्होंने इस राष्ट्रीय

कर्तव्य को पूरा करने की ओर मिल कर पूरा ध्यान नहीं दिया कि एक विदेशी धर्म के विदेशी लोगों की अधीनता से पंजाब को स्वतन्त्र कराते।''

क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन या ज़ियाउद्दीन बरनी ने जो कड़वी कसैली बातें कहीं, वह तो सामयिक क्रोध पर आधारित समझी जा सकती हैं लेकिन उपरोक्त लेख तो सदियों के बाद लिखा गया है। यदि क़ाज़ी मुग़ीस की बातें निन्दनीय हैं तो उपरोक्त इससे अधिक निन्दनीय घोषित की जानी चाहिए। इसके सिवा और क्या कहा जा सकता है कि ऐसे जो लेख लिखे जाते रहे हैं, उनकी तरफ़ कभी ध्यान नहीं देना चाहिए क्योंकि आर0सी0 मजूमदार के लेखों से दिल टूटता है तो इस युग में बहुत सी ऐसी किताबें भी प्रकाशित हुई हैं जिनसे आपसी प्रेम की भावना जागृत होती है। इसी तरह यदि ज़ियाउद्दीन बरनी के कुछ कथनों से दिल आहत होते हैं तो उसी युग में ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं भी मिलती हैं जिनसे क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन का उपदेश निरर्थक दिखाई देता है, बल्कि कुछ हिन्दू राजाओं के सम्बन्ध में अमीर खुसरो, आसामी और स्वयं ज़ियाउद्दीन बरनी ने बहुत अच्छे शब्द प्रयोग किए हैं और उनसे जो खुशगवार सम्बन्ध स्थापित हुए, उसका उल्लेख आनन्द लेकर किया है जो कि अभी उल्लेख होगा। इसके अतिरिक्त यह भी सोचने की आवश्यकता है कि क्या काज़ी मुग़ीसुद्दीन के उपदेश पर कभी अमल किया गया। हज्जाज बिन यूसुफ़ बहुत क्रूर शासक हुआ है। पिछले पन्नों में उसके आदेशों का उल्लेख आ चुका है। उसने कभी मुहम्मद बिन क़ासिम को यह उपदेश नहीं दिया जो क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन ने दिया है और जिसको ज़ियाउद्दीन बरनी ने लिख कर अपनी समझ से एक कर्तव्य पूरा किया है। स्वयं ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपनी आँखों से देखा होगा कि इस उपदेश पर कभी अमल नहीं हुआ और यदि होता तो मुसलमानों का शासन बहुत दिनों तक नहीं चलता। विजेता और पराजित के बीच अवश्य कड़वाहटें रहीं लेकिन विजेता का यह कर्तव्य होता है कि वह कड़वाहट को जल्दी से जल्दी दूर कर दे और ऐसी कड़वाहटें दूर होती रहें।

............जारी.............

❖❖❖

पृष्ठ .....15...का शेष

इसलिए इस्लाम का दृष्टिकोण ये है कि कानून बनाने का मूल अधिकार ब्रह्माण्ड के रचिता व मालिक को है, उस को अपने बंदों में से एक एक से प्यार है, वो अपनी सृष्टि में से एक एक से प्रेम करता है, उसकी मुहब्बत सत्तर माओं से बढ़ कर है, और उसका ज्ञान ऐसा है कि ब्रह्माण्ड की कोई चीज उसकी नज़र से छिपी हुई नहीं, और उसका खास गुण ''इन्साफ़'' है, उसने अपनी किताब में बार बार अपने गुण ''इंसाफ'' का जिक्र किया है, इसलिए जहां कहीं अल्लाह का हुक्म मौजूद हो चाहे वो कुरआन मजीद में हो या हदीस में, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जबाने मुबारक से अल्लाह की मर्जी की व्याख्या है, वहां वही इंसान के लिए सही रास्ता है, हाँ जो हुक्म कुरआन व हदीस में मौजूद न हों, बल्कि फकीहों (इस्लामी कानून के माहिर) के इज्तिहाद और किसी खास जमाने की मस्लेहत पर आधारित हों, उन में गुंजाईश है कि परिस्थितियों की तब्दीली की वजह से हुक्म में तब्दीली की जाए।

❖❖❖

हमारा देश

—मुबीन अहमद फतेहपुरी

भारत के हम वासी हैं और भारत हम को प्यारा है
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है
गंगा जमुना की तहज़ीबों का ये इक गहवारा है
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है
देश के हम मतवाले हैं और देश हमारा अपना है
यहीं पे हमको जीना है और यहीं पे हमको मरना है
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब का यही तराना है
मत बाँटो तुम हम सबको ये सदियों प्रेम पुराना है
दूर रहो उन ग़द्दारों से जो नफ़रत को फैलाते हैं
देश भक्ति का नारा दे कर देश में आग लगाते हैं
अंग्रेज़ों की नीति को लेकर उनकी राह पे चलते हैं
हिन्दू मुस्लिम को लड़वा कर अपने पेट को भरते हैं
देश की नेता नगरी में ये खेल बहुत पुराना है
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है
यही रही गर देश की हालत, देश का अपना क्या होगा
ख़ून की नदियाँ बह जाएंगी, अम्न का बस सपना होगा
रहें अगर हम सब मिल जुल कर देश बड़ी ताक़त होगा
दुनिया पर हम राज करेंगे, हमें न कोई डर होगा
भारत के हम वासी हैं और भारत हमको प्यारा है
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है
जलियाँ वाला बाग़ में देखो हम सबकी इक टोली थी
इन्क़िलाब का नारा अपना, इन्क़िलाब की बोली थी
याद करो हम सबने उस दिन ख़ून की होली खेली थी
हम लोगों का सीना था और अँग्रेज़ों की गोली थी
एक साथ हम रहे हमेशा, फिर क्यों नियारा नियारा है
नफ़रत की मत चिता जलाओ, हिन्दुस्तान हामारा है
यही मेरी विन्ती है अब देश को मत बरबाद करो
प्यार की बोली हर दम बोलो दिलों को बस आबाद करो
नेताओं के चक्कर में मत लोगों का अपमान करो
डरो ज़रा ईश्वर से अपने, मत देश को अब बदनाम करो
वही है ईश्वर वही ख़ुदा है, वही है दाता हम सबका
उसी को पूजो, उसी को मानो उसी का बस सम्मान करो
भारत के हम वासी हैं और भारत हमको प्यारा है
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है

❖❖❖

चँद्रयान-3 दिखा रहा अल्लाह की निशानियाँ

इं0 जावेद इक़बाल

आदिकाल में सूर्य और चंद्रमा के विषय में कुछ जानने की इच्छा इंसान के दिल में रही भी होगी तो कुछ ज्यादा नहीं होगी। उस समय का इंसान इतने में ही संतुष्ट रहा होगा कि सूरज से हमें धूप और रोशनी मिल रही है, इस के कारण दिन–रात का चक्कर चल रहा है और चंद्रमा वह तो महीने तथा वर्ष का हिसाब रखने का मुख्य जरिया था, वैसे बच्चों को बहलाने के काम तब भी आता था और आज भी आता है। नक्षत्र केवल आकाश की सज्जा और रात के अंधेरे में दिशा निर्धारित करने के काम आते थे। इसके अतिरिक्त अंधविश्वासी समाज के लोग सूर्य और चंद्रमा को अपना देवता और पूज्य मानते थे। इन के बारे में अपनी धरती की भांति वायुमंडल, जल स्रोत, पथरीली चट्टानें आदि जैसा गुमान करना भी उस समय पाप समझा जाता था।

दरूद व सलाम हो हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर, लगभग 1400 वर्ष पहले जब आप का आगमन हुआ और आप सल्ल० पर ईश ग्रंथ कुरआन का अवतरण हुआ, तभी अल्लाह ने स्पष्ट शब्दों में ऐलान कर दिया कि धरती आकाश की प्रत्येक रचना हम ने इन्सानों की सेवा और उपयोग के लिए बनाई है। ये सूर्य और चंद्रमा सब अपने अपने दायरे में घूम रहे हैं, मानो अंतरिक्ष में तैर रहे हैं। इन की गति और इनके मार्ग हमने निर्धारित कर दिये हैं। रात और दिन का आगमन हमने इस तरह सुनिश्चित किया है कि दिन के पीछे रात और रात के पीछे दिन धीरे धीरे आते जाते हैं जिसके कारण इंसान असहज महसूस नहीं करता। यदि एक दम से दिन निकल आता और एकदम से रात आ जाया करती तो इंसान इसे बर्दाश्त न कर पाता। चंद्रमा के दक्षिणी भाग में जहां भारत का चंद्रयान पहुंचा है, वहां ऐसी ही स्थिति है। धरती पर धीरे धीरे प्रकाश का फैलना और सिमटना यह भी उस मालिक की रहमत और हिकमत का नमूना है। तभी तो सूरः रहमान में बारम्बार कहा गया है कि तुम अल्लाह की कौन कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे। सृष्टि की इन जैसी अनेक बातों का बयान करने के साथ साथ अल्लाह तआला ने इन्सान को आदेश दिया है कि तुम सूर्य और चंद्रमा की पूजा न करो यह सब तो हमारे आदेशों का पालन कर रहे हैं अतः पूजा तो केवल अल्लाह की ही करो, सजदा केवल उसी को करो। साथ ही अल्लाह ने सृष्टि की सभी रचनाओं पर गौर–फिक्र करने का आह्वान किया है, जगह जगह पर फरमाया कि तुम इन बातों पर ध्यान क्यों नहीं देते, गौर फिक्र क्यों नहीं करते। इसके नतीजे में इंसान ने धरती आकाश की प्रत्येक रचना की पूजा पाठ छोड़ कर उस पर शोध कार्य करना आरंभ कर दिया। क्या समंदर, क्या पहाड़, क्या सूर्य और चंद्रमा तथा अन्य सितारे सभी इंसान की तहक़ीक़ के दायरे में आ गये।

चंद्रमा हमारी ज़मीन का सबसे निकट पड़ोसी के समान है। हमेशा से ही उसे चंदामामा कह कर बच्चों को लोरियां सुनाई जाती रही हैं। अब इंसान के मन में चांद पर जाने की इच्छा भी जागी और उसने इसके विषय में अध्ययन करना

आरम्भ कर दिया। कुरआन में अल्लाह तआ़ला ने एक चैलेंज दिया था कि यदि तुम धरती की सीमाओं से निकल सको तो निकल जाओ, मगर तुम ऐसा नहीं कर सकते बिना उचित शक्ति प्राप्त किए। (55:33)।

लिहाजा इंसान ने उचित शक्ति हासिल करने की जद्दोजुहद आरंभ कर दी और फिर एक दिन 21 जुलाई 1969 को उसने चांद की सतह पर क़दम रख दिए। नीलआर्मस्ट्रांग वह पहला अमेरिकन नागरिक था जिसने चांद पर चहलकदमी की। हालांकि रूस पहले ही अपना लूनर नामक यान 13—9—1959 को चांद की ओर भेज चुका था, मगर वह चांद की सतह पर उतरा नहीं था और न ही उस में कोई इंसान था। इसके बाद 14—12—2013 को चीन ने चांगे—3 नाम का यान चाँद की सतह पर उतारा इस ने अपनी यात्रा 14 दिन में पूरी की थी, फिर शीघ्र ही चीन ने एक अन्य चांगे—4 को 03—01—2019 को चांद के दक्षिणी ध्रुव से बहुत दूर उतारा, इस की यात्रा 27 दिन में पूरी हुई थी।

अब हमारा भारत चांद पर अपना चंद्रयान—3 भेजने वाला चौथा देश बन गया है मगर चांद के दक्षिणी भाग में पहुंचने वाला पहला देश है भारत, क्योंकि दक्षिणी भाग में अभी तक कोई अन्य देश नहीं पहुंचा था। चंद्रयान—3, 14 जुलाई 2023 को श्रीहरिकोटा के मुक़ाम से भेजा गया था, 23 अगस्त को यह चांद की सतह पर उतरा, इस तरह धरती से चांद का सफर 41 दिन में पूरा हुआ। इस मिशन पर रुपए 615 करोड़ मात्र ख़र्च हुए जबकि रूस के द्वारा लूनार—25 मिशन पर 1700 करोड़ खर्च किए गए थे। इस तरह भारत का चंद्रयान बहुत किफायती कहा जायेगा। रूस का लूनार—25 चांद की सतह पर उतरने में सफल नहीं हो सका। वह अंतिम चरण में सतह से टकरा कर नष्ट हो गया। यदि वह सफलता पूर्वक उतर जाता तो भारत के चंद्रयान से एक दिन पहले उतरा होता। दरअसल चांद की सतह पर सफलता पूर्वक उतर पाना एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसे यूं समझिए कि आकाश में उड़ते हुए जहाज को धरती पर सही—सलामत उतारने के लिए मीलों लम्बे रन—वे बनाए जाते हैं, जिस पर जहाज धरती को छूने के बाद दौड़ता हुआ उतरता है। चांद पर तो कोई रन—वे है नहीं, वहां की धरती तो ऊबड़ खाबड़ छोटे बड़े अनेक गढ़ों से भरी हुई है। चांद पर तो हवा भी नहीं है जो गति को कम करने में मददगार हो। चांद के अन्दर जो गुरुत्वाकर्षण शक्ति है यानी अपनी ओर खींचने की ताक़त, वह भी जमीन की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के मुक़ाबले एक चौथाई ही है। अतः चंद्रयान को चांद की सतह पर उतारने में अत्याधिक सावधानी बरतनी थी इसी को सफल लैंडिंग का नाम दिया गया, सफल लैंडिंग के बाद इसरो के वैज्ञानिकों ने इतमिनान की सांस ली, यह हम सभी भारतवासियों के लिए बड़े गर्व की बात है। भारत के लिए गर्व का एक कारण यह भी है कि हमारा चंद्रयान—3 चांद के दक्षिणी भाग पर उतरा है, चांद का यह भाग धरती से कभी नज़र नहीं आता, यहां सूर्य की किरणे महीने में 15 दिन ही पड़ती हैं अतः यह भाग ज़्यादातर अंधकार में रहता है, इसीलिए यहां का तापमान शून्य से नीचे ही रहता है और शून्य से 200 डिग्री तक नीचे चला जाता है।

चांद की दूरी हमारी जमीन से 384400 किलोमीटर है इस का व्यास (*diameter*) 3475 किलोमीटर है जो कि हमारी ज़मीन का लगभग एक चौथाई है।

चंद्रयान चांद के दक्षिणी भाग में ठीक उस समय उतरा जब वहां सूर्य की किरणे पहुंचना आरंभ हो चुकी थीं, इस तरह चंद्रयान की गाड़ी जिसे रोवर कहते हैं, वहां 15 दिन तक सरलता पूर्वक अपना काम कर सकेगी।

चांद पर इंसान के जाने का मक़सद क्या है, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या कुछ बड़े देश अन्य देशों को अपनी शक्ति का रौब व दबदबा दिखा कर अपनी प्रभुसत्ता मनवाना चाहते हैं या चांद पर कुछ महत्वपूर्ण खनिज इत्यादि की खोज कर के उस पर अपना कब्जा ज़माना चाहते हैं। अभी तक चांद पर पानी की खोज की जा रही थी, माना जाता था कि चांद पर पानी नहीं है, मगर चंद्रयान–3 के द्वारा भेजी गई रिपोर्ट्स के आधार पर पानी मिलने की संभावना बढ़ गई है, उस भाग में तापमान अत्याधिक कम होने के कारण पानी बर्फ की चट्टान के रूप में हो सकता है। पानी के अतिरिक्त वायुमण्डल न होने की समस्या भी है। यह दोनों ही चीजें मानव जीवन के लिए बुनियादी ज़रूरत का दर्जा रखती हैं। इनके अभाव में इंसान का वहां बसने के उद्देश्य से जाना और कालोनियाँ बनाना असंभव है।

इस अवसर पर तेरहवीं शताब्दी के पर्शियन वैज्ञानिक, खगोल शास्त्री, गणितज्ञ, फिलासफर नासिरुद्दीन अलतूसी का यदि जिक्र न किया जाए तो यह बड़ी भूल होगी और उनके द्वारा किए गए शोध कार्यों के प्रति बड़ा अन्याय होगा। नासिरुद्दीन अलतूसी अनेक विद्याओं के जनक थे। वह तेरहवीं शताब्दी में वर्तमान ईरान के तूस के मुक़ाम पर पैदा हुए थे। उन्होंने सब से पहली खगोल प्रयोगशाला बनाई थी और सभी ग्रहों का अध्ययन किया था। सर्वप्रथम उन्होंने ही सूर्य के चारों ओर धरती के घूमने का सिद्धांत दिया था अन्यथा आम तौर पर यह माना जाता था कि सूर्य धरती के चारों ओर घूम रहा है। विभिन्न ग्रहों की गति के बारे में भी उन्होंने बड़ी गम्भीरता से अध्ययन किया था और उनकी बनाई तालिकाएं वर्तमान में बड़ी हद तक सटीक सिद्ध हो चुकी हैं। गणित में ट्रिगनामीटरी शाखा के प्रथम जनक भी यही अलतूसी थे। विभिन्न विषयों पर उन्होंने सौ से अधिक लेख एवं पुस्तकें लिखी थी। आज के वैज्ञानिक उनको सम्मान पूर्वक श्रद्धांजलि देते हैं।

अंत में हमें याद रखना चाहिए कि चांद को अल्लाह तआला ने दिन महीने और साल का हिसाब रखने के लिए बनाया है जैसा कि सूरः यूनुस की आयत नं० 6 में फरमाया गया है। उस मालिक ने स्पष्ट शब्दों में समझाया है कि चांद सूरज सब हमारी निशानियां हैं हम ने इन्हें स्थाई एवं उचित (हक़) नियमों के आधार पर बनाया है, ये सब अपने अपने दायरे में तैर रहे हैं। अतः तुम इन की पूजा न करो। पूजा, अर्चना और सजदा तो बस उसी एक के लिए है जिसने इन्हें पैदा किया है। (41:37–38) और निकट भविष्य में हम तुम्हें अंतरिक्ष में और स्वयं तुम्हारे अंदर शरीर में भी अपनी निशानियां दिखायेंगे, यहां तक कि तुम पर बिल्कुल स्पष्ट हो जायेगा और सिद्ध हो जायेगा कि ईशान अल्लाह की बातें पूर्ण सत्य हैं। (41:53)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी

प्रश्नः अगर किसी औरत को हैज़ (मासिक धर्म) आ रहा हो और वह उसी हालत में गफ़लत व लापरवाही की बिना पर तवाफे ज़ियारत करले तो इस बारे में शरीयत का क्या हुक्म है? क्या तवाफ होगा या नहीं? क्या उस पर कोई जुर्माना होगा या नहीं?

उत्तरः अगर औरत ने ऐसी हालत में गफलत व लापरवाही की बिना पर तवाफे जियारत मुकम्मल कर लिया या सात चक्करों में से ज़्यादा से ज़्यादा लगा लिए हैं तो इस सूरत में फर्ज़ अदा हो जाएगा, लेकिन बतौर जुर्माना ऊँट, गाय, भैंस की कुर्बानी वाजिब होगी।

(गुन्यतुन्नासिक—145)

प्रश्नः अगर किसी औरत ने तवाफे ज़ियारत या तवाफे उमरः के ज़माने में हैज़ (मासिक धर्म) आने के डर से दवा इस्तेमाल की या उसको रोकने का कोई और उपाय किया तो उसका क्या हुक्म है?

उत्तरः अगर किसी औरत ने मासिक धर्म आने के डर से धर्मनिरोधक दवा इस्तेमाल की और उस दवा ने अपना काम भी किया, और औरत उसी हाल में तवाफ कर लेती है तो तवाफ दुरुस्त हो जाएगा और कोई जुर्माना भी नहीं देना होगा।

(मनासिक मुल्ला अली क़ारी—350)

प्रश्नः एक महिला हज अदा करने के बाद वापसी की तारीख करीब आने के इंतज़ार में मक्के में ठहरी हुई थी अभी उसने तवाफे विदाअ (अलविदाई तवाफ) नहीं किया था कि हैज आना शुरु हो गया, इसी हालत में फ्लाइट की तारीख आ गयी और वह तवाफे विदाअ़ न कर सकी और अपने देश लौट आई क्या ऐसी सूरत में उसे "दम" अर्थात (पूरी बकरी या गाय आदि के सातवें हिस्सी की कुर्बानी है) देना पड़ेगा?

उत्तरः मासिक धर्म आने की वजह से अगर महिला अलविदाई तवाफ न कर सकी और अपने वतन आ गई तो यह शरीयत की निगाह में उज्र है इसकी वजह से तवाफ माफ हो जाता है और उस पर कोई दम यानी जुर्माना भी लाजिम नहीं आता।

(तातार खानिया—522/2)

प्रश्नः एक व्यक्ति ने हज किया, उन्होंने तवाफे ज़ियारत 10,11,12 जिलहिज्जा की तारीख गुज़रने के बाद 13 तारीख़ को किया और यह हनफी है तो क्या इनका हज हो गया, क्या इन पर कोई जुर्माना तो वाजिब नहीं?

उत्तरः कुर्बानी के तीन मुतअय्यन दिन 10,11,12 जिलहिज्जा में से किसी दिन तवाफे ज़ियारत वाजिब है इसलिए अगर इन तारीख़ों के गुज़रने के बाद तवाफे जियारत किया तो फर्ज तो अदा हो जाएगा मगर लेट करने की वजह से दम देना वाजिब होगा।

(रद्दुलमुहतार 517/2)

प्रश्नः अगर किसी हाजी पर दम वाजिब हो गया और वह किसी वजह से दम का जानवर ज़बह नहीं कर सका और वह अपने देश वापस लौट आया तो वह क्या करे? क्या रूपया सदक़ा करने से यह अदा हो जायेगा?

उत्तरः हाजी जब दम अदा किये बिना अपने वतन लौट आये तो चाहिए कि किसी जरिए से उसकी कीमत हरम भेज दे जहाँ कोई उसकी ओर से बकरा खरीद कर ज़बह कर दे और गोश्त तक्सीम कर दे। ज्ञात रहे कि दम के लिए ज़रूरी है कि हरम की सीमा ही में ज़बह हो, कीमत सदक़ा करने से दम अदा नहीं होगा। (गुन्यतुन्नासिक—263)

मेरा रोना नहीं , रोना है यह सारे गुलिस्ताँ का

✍जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

पाठको! हम सब के मीरे कारवाँ, मिल्लते इस्लामिया के पासबाँ व निगहबाँ, सैकड़ों छोटे बड़े मदारिस व मकातिब, स्कूल व कालेज, सोसाइटीज, तंजीमों, तहरीकों, मसाजिद व औकाफ के बेलौस सरपरस्त, दारुल उलूम नदवतुल उलमा के नाजिम, आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और आल इण्डिया प्यामे इंसानियत फोरम के अध्यक्ष, लाखों धड़कते दिलों की आवाज़, हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह0 को अपने मालिके हक़ीक़ी की खिदमत में पेश हुए तकरीबन पाँच महीने बीत चुके हैं लेकिन देश से ले कर विदेश तक फैले आपके लाखों छात्र, आपके मुरीदीन व तअ़ल्लुक़ वाले अपने मीरे कारवाँ के जाने के गम को अभी भी भुला नहीं पा रहे हैं इसलिए आपके अपने चाहने व मुहब्बत करने वाले आपसे अपने गहरे सम्बन्धों के इज़हार, और आपके मुल्क व मिल्लत के लिए किये गये बलंद कारनामों को जन जन तक पहुँचाने के लिए सेमिनार सम्पोजियम जल्से और बैठकें कर रहे हैं और आपके व्यक्तिगत और सामूहिक व सामाजिक जीवन के उज्जवल कारनामों को सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों और सामाजिक एवं साहित्यिक मासिक एवं अर्द्ध मासिक पत्रिकाओं में लेखों के ज़रिए ख़ूब आम करने का प्रयास कर रहे हैं और करना भी चाहिए ताकि हमारी आने वाली नई पीढ़ी भी वाकिफ हो कि हमारे बुजुर्गों और पुर्खों ने किस तरह दीन व मिल्लत की हिफाजत में अपनी हड्डियाँ गलाई हैं और अब हमारी क्या ज़िम्मेदारी है।

हज़रत मौलाना रह0 की पैदाईश 29 अक्तूबर, 1929 को रायबरेली के एक ऐसे मशहूर दीनी व इल्मी ''हसनी'' खानदान में हुई जो सदियों से तौहीद व रिसालत, या कहिए कि कुर्आन व सुन्नत की हिफ़ाज़त व इशाअत में आगे रहा है जिसमें शहीदे बालाकोट सैयद अहमद शहीद रह0 से ले कर हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 तक बड़ी बड़ी बुजुर्ग हस्तियाँ पैदा हुईं जिन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगियाँ दीन व शरीयत की हिफ़ाज़त में लगा दीं, उसी खानदान की एक कड़ी हमारे हज़रत रह0 थे। इसलिए यह कहना बेजा न होगा कि आपकी पूरी ज़िन्दगी चाहे व्यक्तिगत हो या सामाजिक एवं सांसारिक कुर्आन व सुन्नत का आला नमूना थी। बचपन से लेकर जवानी तक और जवानी से ले कर बुढ़ापे तक या कहिए मौत तक जिसका भी आपसे सम्बन्ध हुआ या जिस प्रकार भी वह आपके संपर्क में आया वह चाहे जिस आयु या जिस वर्ग का व्यक्ति हो वह यह गवाही देता नज़र आता है कि आपका स्वभाव बड़े ही उच्चकोटि का था, आप बड़े ही शालीन और दूरगामी विचारक थे, आप सबको साथ ले कर चलने का हुनर जानते थे इसीलिए आपकी कियादत पर सब को इत्तिफाक़ था। मुस्कुरा के मिलना आपकी फितरत में दाखिल था आपसे मिलने सियासी, समाजी, तंजीमों, तहरीकों, मदारिस के असातिजा व ज़िम्मेदारान और हर वर्ग के छोटे बड़े और बुद्धिजीवी लोग आते और वक़्त बे वक़्त आते आप हर आने वाले की बात बड़े ध्यान व तवज्जोह से सुनते और

उनकी मुश्किलात व परेशानियों का समाधान करने की पूरी कोशिश करते और उनके मान सम्मान का भी पूरा ख्याल रखते। यही वजह है कि हर एक आपको अपना हमदर्द और मसीहा समझता और मुतमइन हो कर लौटता और लौटने के बाद तो वह आपका भक्त व मुरीद ही हो जाता। आपका रहन सहन, खाना पीना, पहनना ओढ़ना बहुत ही सादा था लेकिन सफाई सुथराई में अपनी मिसाल आप थे, आपकी मजलिस में हर समय दीन व शरीअत की हिफ़ाज़त, समाज में फैली बुराइयों के खातमे, नौजवान नस्ल को दीनी व दुनियावी दोनों तालीम से जोड़ने और मुस्लिम समाज की बच्चियों और महिलाओं में बेपर्दगी के बढ़ते रुझान को रोकने के उपाय, और पूरे विश्व में मुस्लिम उम्मत के हालात पर ही चर्चा होती और उनकी गुत्थियाँ सुलझाई जातीं, किसी की बुराई व ग़ीबत और मायूसी की बातों से आपकी मज्लिस बिलकुल पाक होती, मज्लिस चाहे निजी हो या सार्वजनिक बात बिल्कुल नपी तुली कहते, गुस्सा गर्मी, डाँट फटकार किसी की भी अदना सी तौहीन एवं अपमान से आप कोसों दूर थे घर और बाहर आपका मामला यकसाँ था न्याय व इंसाफ़ तो आपकी घुट्टी में पड़ा था अपने बड़ों का आदर सम्मान और छोटों पर शफ़क़त व मुहब्बत कोई आपसे सीखे, शर्म व हया, पाकदामनी व पाकबाज़ी (शुद्धता एवं पवित्रता) ज़बान की हिफ़ाज़त आपकी ज़िन्दगी का मूल मंत्र था आपकी पूरी ज़िन्दगी तक़्वा व परहेजगारी से सुसज्जित थी।

आपने इंसानों का तअल्लुक़ अल्लाह व रसूल दीन–शरीयत से जोड़ने और समाज में जागरूकता पैदा करके उनके स्तर को बुलंद करने और नई ऊर्जा व उमंग के लिए ''कुर्आन मजीद इंसानी ज़िन्दगी का रहबरे कामिल'', ''रहबरे इंसानियत सल्ल0 ''मुस्लिम समाज की जिम्मेदारियाँ और तक़ाजे'' ''तोहफ–ए–रमज़ान'', जज़ीरतुल अरब'', ''हज व मुक़ामाते हज'' जैसी अंगिनत किताबें लिखी हैं हमें उन्हें पढ़ते और ईमान को ताज़ा करते रहना चाहिए।

ज़िन्दगी के आख़री दस सालों में तो आप पर मुसीबतों और आजमाईशों के पहाड़ ही टूट पड़े, छोटे भाई मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी, दामाद मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी, और मौलाना हमजा हसनी नदवी, और मौलाना महमूद हसनी नदवी, यह सब के सब आपके बड़े करीबी अ़ज़ीज और आपके तमाम दीनी इल्मी दावती तंजीमी व तहरीकी कार्यों में बराबर के शरीक रहा करते थे एक के बाद एक आपके इन सगे सम्बन्धियों के देहांत ने आपको बिल्कुल तोड़ दिया, रही सही कसर नदवतुल उलमा के विरोध में अपनों के ही अलमे बगावत बलंद करने ने पूरी कर दी। जिसके बाद तो आप बिल्कुल टूट ही गये, लेकिन इन आज़माइशी हालात में भी अपने छोटों अजीज़ों और समस्त कारकुनान मुरीदीन व तअल्लुक वालों को यह उपदेश देते रहे कि संकट के यह बादल जल्द छट जायेंगे, बस सब्र और शालीनता से काम करें, और स्वयं भी आप सब्र का पहाड़ बने रहे और शालीनता को एक पल के लिए भी अपने दामन से छूटने न दिया।

आइए हम सब अहद करें कि हम सब अपने मीरे कारवाँ के दिखाए एवं बताये मार्ग पर स्वयं चल कर आपके छूटे कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना दम खम लगा देंगे।

मौत उसकी है करे जिसका ज़माना अफसोस
यूँ तो दुनिया में सभी आए हैं मरने के लिए।

❖❖❖

दौलत से बड़ी इज़्ज़त

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

इमाम बुखारी इस्लामी जगत के बहुत बड़े विद्वान गुज़रे हैं उनकी संकलित पुस्तक ''बुखारी'' पवित्र कुर्आन के बाद प्रमाणिक और आथेंटिक मानी गई है।

एक बार वह किसी कर्मवश पानी वाले जहाज़ से यात्रा पर निकले। जहाज़ काफी बड़ा था। सैकड़ों लोग उस पर सवार थे। बच्चे बूढ़े मर्द औरत सभी सवार थे। जहाज़ अपनी रफ़्तार से मंज़िल की ओर बढ़ रहा था। रात भी ढल चुकी थी और सुबह की किरने फूटने को थीं, तो दूसरी ओर नमाज़ी लोग इबादतों में लग गए थे कि सहसा जहाज़ में शोर उठा कि ''मैं लुट गया, बर्बाद हो गया। सुबह सवेरे ऐसे विलाप से लोग सहम गये और उस आवाज़ की ओर लपके। देखा की एक आदमी दहाड़े मार कर विलाप कर रहा है। लोगों ने पूछा, भाई! आखिर माजरा क्या है, सब खैरियत तो? कहने लगा कि मैं एक ग़रीब आदमी हूँ। पाई–पाई जोड़ कर एक हज़ार अशरफियाँ इकट्ठा करके एक थैली में रखा था मगर हाय रे किस्मत! किसी ने हाथ साफ कर दिया।

एक हज़ार अशरफी एक बड़ी रक़म मानी जाती है, जिसने भी सुना दुखी हुआ। कुछ लोगों को उस बेचारे की तकलीफ़ देखी न गई तो जहाज़ के मालिक को बुला कर पूरी विप्दा कह सुनाई। मालिक ने कहा, अगर थैली जहाज़ में चोरी हुई तो पता चल जाएगा, मैं सबकी तलाशी ले लेता हूँ। अतः लोगों की तलाशी शुरु हुई, एक–एक सामान को उलट–पलट कर देखा गया, मगर परिणाम शून्य रहा और किसी के पास थैली न मिली। अब बाज़ी पलटती दिखाई देने लगी। जो लोग उसकी हमदर्दी में मरे जा रहे थे, उसी को संदिग्ध ठहराने लगे, बहस मुसाफिरों में होने लगी। कहते सुनते लोगों ने ये नतीजा निकाला कि ये विलाप करने वाला ही झूटा है। अब सारे लोगों ने मन भर भर उसे बुरा भला कहा और जब तक यात्रा चलती रही, कोई न कोई उसको सुना जाता।

इस्लाम धर्म में झूट को सख़्त नापसन्द किया गया हैं हदीस की किताबों में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का कथन दर्ज है कि कपटी (मुनाफिक़) की तीन निशानियां हैं–

(1) जब बात करे तो झूट बोले।
(2) जब वादा करे तो वादा खिलाफी करे।
(3) जब उसके पास अमानत रखवाई जाए तो ख्यानत करे।

बहरहाल! बात उस फरेबी की हो रही थी कि जिसने नौटंकी करके सबका मूड खराब कर दिया था, मगर किसी तरह से सफर खत्म हुआ और लंगर डाल दिया गया तो वह फरेबी हज़रत इमाम बुखारी के पास पहुँच कहने लगा कि आपने हमसे झूट बोला था कि मेरे (इमाम बुखारी) पास एक हज़ार अशरफियों से भरी थैली है? इमाम बुखारी ने कहा, नहीं मैंने झूट नहीं बोला। फरेबी आदमी ने पूछा तब वह थैली गई कहाँ? इमाम बुखारी ने कहा, जब तुमने अशरफियों से भरी थैली के गुम हो जाने का ड्रामा रचा तो मैं

शेष पृष्ठ ....34....पर

हमें ज़मीं के मसायल पे बात करनी है

मुहम्मद नस्रुल्लाह नदवी

भारत इस समय चाँद पर मौजूद है, पूरा देश जश्न में डूबा हुआ है, हर ओर हर्षोल्लास के नग्मे गाये जा रहे हैं। वास्तव में यह एक ऐतिहासिक मौक़ा है, इस पर खुशी का इज़हार बिल्कुल दुरुस्त है। प्रधानमंत्री समेत देश की नामी ग्रामी हस्तियों ने अपने जज़्बात का इज़हार किया और देश के महान वैज्ञानिकों को उनकी सफलता पर मुबारकबाद दी, जिनके अथक प्रयासों से ही यह सफलता प्राप्त हुई और एक सपना साकार हो पाया।

इस सफलता के साथ ही भारत अमेरिका, रूस और चीन की कतार में शामिल हो गया है, स्पष्ट रहे कि इससे पहले सिर्फ इन तीन देशों के नसीब में यह सफलता आई है, अब चौथा देश भारत बन गया है जिसने कई देशों को टेक्नोलाजी में पीछे छोड़ दिया है, यह एक असाधारण उपलब्धि है जिस पर गर्व करना बिल्कुल सही है।

आमतौर से इंसान जब किसी बलंदी पर पहुँच जाता है तो उसका जेहन–दिमाग सातवें आसमान पर पहुँच जाता है और वह ज़मीनी हक़ीक़तों से मुँह मोड़ लेता है, इसका नज़ारा उस समय देखने को मिला, जब चंद्रयान–3 ने चाँद पर क़दम रखा, मीडिया ने ऐसा समाँ बाँधा कि गोया भारत ने पूरे विश्व पर विजय प्राप्त कर ली और अब उसके सारे मसायल चुटकियों में हल हो जाएंगे। वह भूल गया कि भारत में एक राज्य मणीपुर भी है जो आज भी धधक रहा है और नफ़रत की आग में झुलस रहा है, जहाँ खुले आम इज़्ज़तें नीलाम की जा रही हैं और औरतें निर्वस्त्र करके घुमाई जा रही हैं इस भयावह मंज़र को पूरी दुनिया ने अपनी आँखों से देखा, अभी कल की बात है मध्य प्रदेश में बीजेपी के एक लीडर ने जिस तरह एक दलित के मुँह पर पेशाब किया और उसका वीडियो भी बनवाया, जिस देश में आज भी इंसानों को ज़ात बिरादरी की वजह से अछूत समझा जाता है, और उनके साथ जानवरों से भी बदतर सुलूक किया जाता है, जहाँ चलती ट्रेन में मुसलमानों पर गोलियाँ बरसाई जाती हों और उनको खाक–खून में तड़पाया जाता हो, जहाँ मुसलमानों के साथ मोब लिंचिंग की जाती है, और ऐसा करने वालों को हीरो बना दिया जाता है, जहाँ बलात्कार के मुजरिमों का फूल माला से स्वागत किया जाता है, जहाँ एक खास नजरिये के लीडरान खुले आम भड़काऊ भाषण देते हैं और पुलिस उनका बाल बीका नहीं कर पाती है, जहाँ लाशों के ढेर पर सत्ता के महल तामीर किये जाते हैं जहाँ बुलडोज़र कीड़े मकोड़े की तरह घूमते रहते हैं और मामूली मामूली बात पर मुसलमानों के घरों को पल भर में ध्वस्त कर देते हैं, जहाँ गोदी मोडिया नफरती प्रोग्राम करता है, और आम जनमानस के ज़ेहन में नफ़रत का ज़हर घोलता है, जहाँ न्याय, सत्ता की दहलीज पर आ कर दम तोड़ देता है, जहाँ पूंजीपतियों की तिजोरियाँ भरने के लिए किसानों, मज़दूरों और गरीबों का खून चूसा जाता है, जहाँ देश की सारी संपत्ति एक व्यक्ति के हाथ में गिरवी रखी जाती है, जहाँ ऐजेंसियाँ हुकूमत की चाकरी करती हैं, जहाँ प्रेस की आज़ादी आखरी साँसें ले रही है, और वास्तविक्ताओं को बेनकाब करने वाले रिपोर्ट्रों को गिरफ़्तार कर लिया जाता है, जहाँ खाने पीने की वस्तुओं में मिलावट की जाती है और मौत के इन सौदागरों पर कोई

कार्यवाई नहीं होती है, जहाँ लाखों लोगों को दो वक़्त की रोटी नहीं मिलती है, उनकी झोपड़ी में दिया तक नहीं जलता, उनके बच्चों को दवा तक नसीब नहीं होती है, उनके पास तन छुपाने के लिए कपड़े नहीं होते और मुल्क का मुखिया एक दिन में कई–कई बार सूट बदलता है, जहाँ इंसानियत के कातिल की भक्ती की जाती है और उसको सर आँखों पर बिठाया जाता है।

यह कड़वा सच है, जो किसी भी मुल्क के माथे पर बदनुमा दाग़ है, जब तक इन दागों से दामन को पाक नहीं किया जायेगा और जब तक न्याय की सर्वोच्चता कायम नहीं की जायेगी, एक नहीं हज़ार बार कोई देश चाँद क्या, उससे आगे भी पहुँच जाए, उस देश की तस्वीर नहीं बदल सकती है। सरकार को चाहिए कि आसमान की बात करने के साथ–साथ ज़मीनी मसायल पर भी ध्यान दे और आंतरिक्ष में उड़ान भरने के साथ साथ हक़ीक़त की दुनिया में भी जीने का हुनर पैदा करे।

तुम आसमाँ की बुलंदी से ज़ल्द लौट आना।
हमें ज़मीं के मसायल पे बात करनी है।।

हे इसरो, तुझे सलाम

दिलशाद अहमद

अच्छा है, चाँद पर चँद्रयान गया है,
न हिन्दू, न कोई मुसलमान गया है।
न कोई राम न कोई रहमान गया है,
दरअसल, चाँद पर विज्ञान गया है।।

शुक्र है, वहाँ न कोई धर्म गया है,
न ही जात–पात का कुकर्म गया है।
न ही राजनीति का पराक्रम गया है,
वहाँ वैज्ञानिकों का परिश्रम गया है।।

वैज्ञानिकों तुम ही अंतिम विश्वास हो,
बेशक प्रगति की लाजवाब आस हो।
और तुम्हीं हमारी उम्मीद–ए–खास हो,
कुछ भी करो पर न देश निराश हो।।

हे इसरो, तुझे दिल से सलाम है अपना,
तूने पूरा किया देश के गौरव का सपना।
तुम इस जज्बे को यूंही बरकरार रखना,
न किसी अंधश्रद्धा का कर्जदार करना।।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.......

घरेलू मसायल

मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

माँ और दादा की अनुपस्थिति में खर्चे की जिम्मेदारी किस पर?:-

माँ और दादा के बाद यतीम बच्चे के खर्चे की जिम्मेदारी, चचा और उन दूसरे रिश्तेदारों पर, मय्यत के छोड़े हुए माल के अनुपात के अनुसार लागू होती है, जो उस बच्चे के शरीयत के अनुसार वारिस बन सकते हैं, यहां ये भी मालूम होना चाहिए कि ये सिर्फ नैतिक जिम्मेदारी नहीं है बल्कि कानूनी है, यानी इन लोगों पर खर्चा वाजिब है। अवहेलना करने पर जबरदस्ती वसूल किया जा सकता है। (हिदाया जिल्द 1–2, पृष्ठः 427) हनफी उलमा ने सभी वारिसों पर (विरासत के हिस्से के बराबर) यतीम बच्चे के खर्चे का वाजिब होना, प्रत्यक्षरूप से कुरआन मजीद की आयत ''और वारिस पर भी उसी के बराबर वाजिब है''। (सुरः बकराः 233) से लिया है। ये तफ्सीर सहाबा और ताबेईन हजरात में से हज़रत उमर, जैद बिन साबित (रजि०), हसन, जुवैब, अता, और कतादह (रह०) से रिवायत की गई है। (अहकामुल कुरआन –जस्सास पेज 406/1)

और हिब्रूल उम्मत, मुफस्सिर–ए–कुरआन हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि०) से आयत की तफ्सीर में लिखे अलफाज का भी इमाम अबू बक्र जस्सास हनफी ने ये मतलब निकाला है कि इब्ने अब्बास (रजि०) के नज़दीक़ भी खर्चा वारिस के जिम्मे है।

(अहकामुल कुरआन –जस्सास 406/1)

उस बच्चे का अगर कोई रिश्तेदार न हो, या ऐसा कोई न हो (जो अपनी गरीबी की वजह से) उस यतीम का बोझ उठा सके तो फिर सरकार पर जिम्मेदारी डाली जा सकती कि वो उसका खर्च बर्दाश्त करे, क्योंकि कुछ हालतों में बाप की मौजूदगी में भी, सरकार जिम्मेदार ठहराई जा सकती है तो इस सूरत में और भी जरूरी तौर पर जिम्मेदार बनाई जा सकेगी, जैसा कि मशहूर शोधकर्ता फकीह इब्ने हुमाम (रह०) फरमाते हैं–

अनुवादः– ''अगर सब बच्चे निर्धन और छोटे हैं, या हैं तो बड़े मगर अपाहिज हैं और बाप भी विकलांग है तो उनका खर्चा बैतुल माल से दिया जाएगा, क्योंकि इस जैसी हालत में बाप का खर्चा भी बैतुल माल पर है।''

(फत्हुल कदीर– 381/2)

ऊपर की सारी शक्लों में आमतौर पर और इस शक्ल (खर्चा बर्दाश्त करने के लायक किसी रिश्तेदार के न होने में) खासतौर से इस्लामी हुकूमत या उसका बदल (मुसलामानों का शरई कजा सिस्टम या बैतुल माल या इस जैसा कोई संगठन) मौजूद होना जरूई है इस जमाने में खराबी की असल वजह यही है कि सही मायने में इस्लामी हुकूमत (या उसका बदल) नहीं है तकरीबन यही बात ''तफ्सीरे कुर्तुबी'' में कही गई–

अनुवादः– ''अगर यतीम गरीब है उसके पास माल बिलकुल नहीं है तो सरकार पर जरूरी है कि इसका इंतेजाम बैतुल माल से करे, अगर सरकार नहीं करती है तो मुसलमानों पर वाजिब है जो उस यतीम के जितना करीब होगा उतना वाजिब होगा।'' (तफ्सीरे कुर्तुबी मुद्रित मिस्र, जिल्द– 5, पृष्ठ –33)

इस कायदे का समर्थन उन सही हदीसों से भी होता है, जिनमें नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने (इल्मी राज्य के सबसे बड़े जिम्मेदार होने की हैसियत से) फरमायाः—

अनुवादः— मरते वक़्त जिसने जो माल छोड़ा वो उसके वारिसों के लिए है और जिसने सिर्फ निर्धन बच्चे छोड़े, उनकी जिम्मेदारी हम पर है। (और एक हदीस में है) तुम में से जिसने कर्ज या बे सहारा बच्चे छोड़े हम उनके जिम्मेदार हैं। ''(सहीह मुस्लिमः 34—36 / 2, हदीस की विश्वसनीय किताबों में इस तरह की और भी हदीसें विभिन्न शब्दों में मौजूद हैं)।

यतीमों की किफालत (प्रयोजन) के मुतअल्लिक़ इन खास हुक्मों के अलावा साधारण प्रकार के वो निर्देश अलग हैं, जिनमें सारे मुसलमानों पर सामूहिक रूप से उनकी देख भाल की जिम्मेदारी डाली गई है, और इस हद तक जोर और बलपूर्वक इस तरफ ध्यान आकर्षित कराया गया है कि इस्लाम के नाम लेने वालों में धार्मिक प्रतिबद्धता जरा भी हो तो वो यतीमों की तरफ से असावधानी जरा भी नहीं बरत सकते, इस तरह उनकी कोई ज़रूरत पूरी होने से नहीं रह सकती, इस बारे में कुरआन मजीद के अंदर कोई दस से ज़्यादा आयतें हैं, और ऐसी हदीसों की तो गिनती ही मुश्किल है जिनमें यतीम की किफालत करने, बल्कि उसके साथ सिर्फ शफकत से पेश आजाने ही पर असाधारण सवाब का वादा है, और निश्चित रूप से उसी का ये असर है कि मुसलमानों की बड़ी आबादी वाला शायद ही कोई अहम कस्बा या शहर ऐसा निकले जिसमें यतीमों की तरबियत और उनकी जरूरतों के लिए कोई संस्था, संपत्ति या कोई वक़्फ न हो। इससे आगे बढ़ कर ये कि ''माले गनीमत'' और ''माले फै'' दोनों में उनका हिस्सा रखा गया है, और महत्व बताने के लिए दूसरे सभी आम खर्चों से पहले उनका जिक्र किया गया है।

(सूरह अनफालः 41, सूरः हश्र 7)

निष्कर्ष ये निकलता है कि शरीयत ने उस बच्चे की परवरिश की कानूनी जिम्मेदारी बहरहाल किसी न किसी पर डाली है, और उसे यूँ ही बेसहारा नहीं छोड़ दिया है, लेकिन जिन लोगों की नज़र की उड़ान इस्लाम के व्यापक और जीवन के हर क्षेत्र को सम्मिलित करने वाले कानूनों तक नहीं है, और जो इसे सिर्फ कुछ इबादतों बल्कि ''रस्मों'' और जागीरदारना कानूनों का संग्रह समझते हैं, वही ''वरासत से महरूम पोते'' का मामला उछाल कर शरीयत पर आरोप लगाते हैं, मगर अपनी तंगनजरी पर मातम नहीं करते।

.........ज़ारी..........

❖❖❖

बेकुसूर मुस्लिम नौजवानों के मसीहा, गुलज़ार आज़मी का इन्तिक़ाल

बहुत अफ़सोसनाक तकलीफ़देह ख़बर है कि 20 अगस्त 2023 ई0 को मिल्लत के बेलौस ख़ादिम जनाब गुलज़ार आजमी साहब का हार्ट—अटेक में इन्तिक़ाल हो गया, इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम जमीअत उलमा—ए—महाराष्ट्रा के क़ानूनी इमदाद कमेटी के सिक्रेट्री थे, वह रहने वाले आज़मगढ़, यू0पी0 के थे लेकिन पूरी ज़िन्दगी उन्होंने जमीअत के आफ़िस भिण्डी बाज़ार मुम्बई में गुज़ार दी, वह मिल्लत के मुख़लिस ख़ादिम थे, आख़िरी ज़माने में उन्होंने अपनी सलाहियतें और मेहनतें आतंकवाद के झूटे मुक़दमों में फँसाए गये नौजवानों को क़ानूनी मदद उपलब्ध कराने में लगा दीं। वह कई बेकुसूर नौजवानों को फाँसी के फंदे से बचाने में कामयाब हुए, इन्तिक़ाल के समय उनकी उम्र 89 साल की थी लेकिन अपने कामों में बहुत चाक़चौबन्द थे अल्लाह तआला मरहूम की मग़फिरत फ़रमाए और जन्नत में आला मुक़ाम अता फ़रमाए।

मुहम्मद सल्ल० के चार यार

अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

नबी के चार यारों का, जहाँ में तज़किरा होगा।
मुहम्मद के दुलारों का, जहाँ में तज़किरा होगा।।

अबू बकरो उमर, उस्मान, हैदर दीन के रहबर।
क़यामत तक जहाँ में तो, उन्हीं का तज़क़िरा होगा।।

सहाबा ने लहू से, दीन के गुलशन को सींचा है।
मुसलमाँ के लबों पर तो, उन्हीं का तज़किरा होगा।।

नबी के बाद ही की है, खिलाफ़त चार यारों ने।
अबू बकरो उमर, उस्मानो अली का तज़किरा होगा।।

मुहम्मद ने चलाई जिस घड़ी, तौहीद की दावत।
पढ़ा सिद्दीक़ ने कलमा, जहाँ में जत्किरा होगा।

चले इस्लाम को ढ़ाने, वही इस्लाम ले आये।
उमर फ़रूक़ का तो अब, जहाँ में तज़किरा होगा।।

रसूले पाक की दो बेटियाँ, ब्याही गईं जिनको।
उन्हीं उस्मान ज़िन्नूरैन का अब तज़किरा होगा।।

अली बच्चे ही थे, लेकिन वह तो इस्लाम ले आये।
ख़ुदा के उस मुजाहिद का जहाँ में तज़किरा होगा।

अबू बकरो उमर, उसमान, हैदर, दीन के दाई।
मदह सिद्दीक़ी लिखता है, जहाँ में तज़किरा होगा।।

❖❖❖

उम्मुल मोमिनीन

हज़रत सौदा रज़ि0

सादिका तस्नीम फारूक़ी

''हज़रत सौदा'' आमिर बिन लुवई खानदान से थीं जो कुरैश का एक मशहूर खानदान था, माँ का नाम शमूस था, सकरान रज़ि0 बिन अम्र से जो इनके बाप के चचा ज़ाद भाई थे शादी हुई थी।

आप नुबूवत मिल जाने के बाद शुरु ही में इस्लाम ले आयीं, इनके साथ उनके पति भी इस्लाम लाए, इसलिए उनको पुराने इस्लाम लाने वालों में गिना जाता था हबशः की पहली हिजरत के समय तक हज़रत सौदा रज़ि0 और उनके पति मक्का ही में ठहरे रहे परन्तु जब मुश्रिकीन के ज़ुल्म व सितम की कोई हद न रही और मुहाजिरीन का एक बड़ा गिरोह हिजरत के लिए तैयार हुआ तो उसमें हज़रत सौदा रज़ि0 और उनके पति भी शामिल हो गये।

कई वर्ष हबशः में रह कर मक्का को वापस आयीं, सकरान रज़ि0 की कुछ दिन के बाद वफात हो गई।

अजवाजे मुतह्हरात में यह फ़ज़ीलत केवल हज़रत सौदा रज़ि0 को मिली है कि हज़रत खदीज़ा रज़ि0 के इन्तिक़ाल के बाद सबसे पहले वही हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के निकाह में आयीं, हज़रत खदीजा रज़ि0 के इन्तिक़ाल से मुहम्मद सल्ल0 बहुत मगगीन व परेशान थे, यह हालत देख कर खौला बिन्ते हकीम (उस्मान बिन मजऊन रज़ि0 की पत्नी) ने कहा कि आपको एक रफीक़ (सहायक) की ज़रूरत है, आपने फरमाया, हां घर बार बाल बच्चों का इन्तिजाम सब खदीजा रज़ि0 के जिम्मे था। आप की इजाज़त से वह हज़रत सौदा रज़ि0 के बाप के पास गयीं और जाहिलियत के तरीके पर सलाम किया फिर निकाह का पैग़ाम सुनाया, उन्होंने कहा हां मुहम्मद सल्ल0 शरीफ आदमी है परन्तु सौदा रज़ि0 से भी पूछ लो, यहां तक कि सब काम हो गया तो मुहम्मद सल्ल0 खुद तशरीफ ले गये और सौदा के बाप ने निकाह पढ़ाया, चार सौ दिरहम मेहर निश्चित हुआ, निकाह के बाद अब्दुल्लाह बिन जमआ (हज़रत सौदा रज़ि0 के भाई) जो उस समय काफिर थे, आए और उनको यह हाल मालूम हुआ तो सर पर मिट्टी डाल ली कि क्या गज़ब हो गया, इस्लाम लाने के बाद अपनी इस नादानी पर हमेशा उनको अफसोस आता था। (जरकानी भाग 3 पेज 261)

हज़रत सौदा का निकाह रमजान सन् दस नबवी में हुआ इसलिए उनके और हज़रत आइशा रज़ि0 के निकाह का ज़माना करीब–करीब है इसलिए इतिहासकारों में इख़्तिलाफ है कि किसका निकाह पहले हुआ किसका बाद में। इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है कि सौदा रज़ि0 को पहल प्राप्त है और अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अकील हज़रत आइशा रज़ि0 को पहल प्राप्त समझते हैं।

(जरकानी 260/3)

कुछ रिवायतों में है कि हज़रत सौदा रज़ि0 ने अपने पहले पति की ज़िन्दगी में एक ख़्वाब देखा था उनसे बयान किया तो बोले कि शायद मेरी मौत का ज़माना करीब है और तुम्हारा निकाह रसूल सल्ल0 से होगा अतः यह ख्वाब पूरा हुआ।

नबूवत के तेरहवें साल जब आपने मदीना मुनव्वरा में हिजरत की तो हज़रत ज़ैद इब्ने हारसा रज़ि0 को मक्का भेजा, कि हज़रत सौदा रज़ि0 आदि को लेकर आयें, अतः वह और हज़रत फातिमा रज़ि0 हज़रत ज़ैद रज़ि0 के साथ मदीना आयीं।

सन् दस हिजरी में जब मुहम्मद सल्ल0 ने हज किया तो हज़रत सौदा रज़ि0 भी साथ थी, वह बुलन्द व बाला और मोटी थी इस वजह से तेजी के साथ चल फिर नहीं सकती थीं, इसलिए मुहम्मद सल्ल0 ने इजाज़त दी कि और लोगों के मुज़दलफ़ा से रवाना होने से पहले उनको चला जाना चाहिए क्योंकि उनको भीड़ भाड़ में चलने से तकलीफ़ होगी।
(सही बुखारी भाग—1 पेज 228)

एक बार अज़वाज मुतह्हरात रज़ि0 मुहम्मद सल्ल0 की ख़िदमत में हाजिर थीं उन्होंने पूछा कि या रसूलुल्लाह! हम में सबसे पहले कौन मरेगा? फरमाया कि जिसका हाथ सबसे बड़ा है। लोगों ने जाहिरी माना समझे, हाथ नापे गये तो सबसे बड़ा हाथ हज़रत सौदा रज़ि0 का था। (तबकात भाग 8 पेज 38) परन्तु जब सबसे पहले हज़रत जैनब रज़ि0 का इन्तिक़ाल हुआ तो मालूम हुआ कि हाथ की बड़ाई से आपका मकसूद सखावत और फय्याजी था, वाकिदी ने हज़रत सौदा रज़ि0 का साले वफात चौवन हिजरी बताया है। परन्तु मिशकात की रिवायत यह है कि उन्होंने हज़रत उमर रज़ि0 के अख़ीर ज़माने—ए—खिलाफत में इन्तिक़ाल किया। (उसदुल ग़ाबा व इस्तिआब व खुलास—ए—तहजीब हालात सौदा)

मुहम्मद सल्ल0 से इनकी कोई औलाद नहीं हुई, पहले पति हज़रत सकरान रज़ि0 ने एक लड़का यादगार छोड़ा था, जिसका नाम अब्दुर्रहमान था, उन्होंने जंग, जलूला, (फारिस) में शहादत हासिल की।
(जरकानी भाग 2 पेज 260)

हज़रत उमर रज़ि0 ने 23 हि0 में वफात पाई है इसलिए हज़रत सौदा रज़ि0 की वफ़ात का साल 22 हि0 होगा ख़मीस में यही रिवायत है और यही सबसे ज़्यादा सही है।
(जरकानी भाग 3 पेज 262)

अज़वाज मुतह्हरात में हज़रत सौदा रज़ि0 से ज़्यादा कोई बुलन्द व बाला न था हज़रत आयशा रज़ि0 का कहना था कि जिसने उनको देख लिया, उससे वह छिप नहीं सकती थी। (सही बुखारी भाग 2 पेज 77) जरकानी में है कि उनका शरीर लम्बा था) जरकानी भाग 3 पेज 456)।

हज़रत आयशा रज़ि0 फरमाती हैं सौदा रज़ि0 के अलावा किसी औरत को देख कर मुझे यह ख़्याल नहीं हुआ कि उसके क़ल्ब (दिल) में मेरी रूह (आत्मा) होती।

फरमांबरदारी में वह तमाम अजवाज मुतह्हरात से मुम्ताज (प्रतिष्ठित) थीं आपने हज्जतुल विदा के मौक़ा पर अज़वाज़ मुतह्हरात को मुख़ातब करके फरमाया था कि ''मेरे बाद घर में बैठना'' (जरकानी भाग 3 पेज 261) अतः हज़रत सौदा रज़ि0 इसके लिए न निकलीं, फरमाती थीं कि मैं हज और उमरः दोनों कर चुकी हूं और अब अल्लाह के हुक्म के अनुसार घर में बैठूंगी।
(तबक़ात भाग 8 पेज 38)

सखावत और फय्याजी में भी बहुत बढ़—चढ़ कर थीं एक बार हज़रत उमर रज़ि0 ने उनकी खिदमत में एक थैली भेजी, लाने वाले से पूछा इसमें क्या है? बोला दिरहम, बोलीं खजूर की थैली में दिरहम भेजे जाते हैं, यह कह कर उसी समय सब को बांट दिया। (इसाबा भाग—8 पेज 118) आप रज़ि0 अन्हा को हस्तशिल्प में बड़ी महारत थी इसलिए वह तायफ़ की खालें बनाती थीं और उससे जो आमदनी होती थी उसको बहुत आज़ादी के साथ नेक कामों में खर्च करती थी।
(इसाबा 65)

वह और हज़रत आयशा रज़ि0 आगे—पीछे निकाह में आयी थीं परन्तु उनकी उम्र बहुत ज़्यादा थी इसलिए जब बूढ़ी हो गयीं तो उनको संदेह हुआ कि शायद मुहम्मद सल्ल0 तलाक़ दे दें और सोहबत न करें, इस बिना पर उन्होंने अपनी

बारी हज़रत आयशा रज़ि0 को दे दी। और उन्होंने खुशी से कुबूल कर ली।

(सही बुखारी व मुस्लिम किताबुन्निकाह)

मिजाज तेज था, हज़रत आयशा उनको बेहद मानती थीं परन्तु कहती थी, एक बार क़ज़ाए हाजत (लैट्रीन) के लिए जंगल जा रही थी, रास्ते में हज़रत उमर रज़ि0 मिल गये, अतः हज़रत सौदा रज़ि0 का कद जाहिर था उन्होंने पहचान लिया, हज़रत उमर रज़ि0 को अज़वाज मुतह्हरात का निकलना बुरा लगा और वह मुहम्मद सल्ल0 की खिदमत में पर्दा की बात रख ही चुके थे, इसलिए बोले सौदा रज़ि0 तुमको हमने पहचान लिया, हज़रत सौदा को बहुत बुरा लगा, मुहम्मद सल्ल0 के पास पहुंची और हज़रत उमर रज़ि0 की शिकायत की, इसी किस्सा के बाद आयते हिजाब (पर्दा की आयत) नाज़िल हुई।

(सही बुखारी भाग 1 पेज 26)

मज़ाकिया इस कदर थी कि कभी–कभी इस अन्दाज़ से चलती थी कि आप हंस पड़ते थे, एक बार कहने लगीं कि कल रात को मैंने आपके साथ नमाज़ पढ़ी थी, आपने इस कदर (देर तक) रुकूअ़ किया कि मुझ को नकसीर फुटने का शुब्हा हो गया, इसलिए मैं देर तक नाक पकड़े रही आप सल्ल0 इस शब्द को सुन कर मुस्कुरा उठे।

(इब्ने सअद भाग 8 पेज 37)

दज्जाल से बहुत डरती थीं, एक बार हज़रत आयशा रज़ि0 और हफ़्सा रज़ि0 के साथ आ रही थीं, दोनों ने मजाक में कहा तुमने कुछ सुना? बोली क्या? दज्जाल निकल आया है हज़रत सौदा रज़ि0 यह सुन कर घबरा गईं, एक खेमा जिसमें कुछ आदमी आग सुलगा रहे थे, पास में था जल्दी से उसके अन्दर घुस गईं, हज़रत आयशा रज़ि0 और हफ़्सा रज़ि0 हंसती हुई मुहम्मद सल्ल0 के पास पहुंची और आपको इस मजाक की खबर की आप तशरीफ लाए और खेमा के दरवाजे पर खड़े हो कर फरमाया कि अभी दज्जाल नहीं निकला है यह सुन कर हज़रत सौदा रज़ि0 बाहर आयीं तो मकड़ी का जाला शरीर में लगा हुआ था उसको बाहर आकर साफ किया।

(इसाबा भाग 8 पेज 65)

❖❖❖

पृष्ठ .....26...का शेष

समझ गया कि ये तेरा मेरी थैली हथियाने का ढ़ोंग है। जब थैली मेरे पास निकलती तो मैं सबकी नज़र में चोर बन जाता। सफाई–गवाही की प्रक्रिया तो बाद में होती। सब मेरे मुँह पर ही मुझे बुरा कहते और गालियाँ देते। इसलिए मैंने वह थैली चुपके से दरिया में डाल दी। ढ़ोंगी ने हैरत से पूछा, तब तो आपका बड़ा नुकसान हुआ? इमाम बुखारी ने कहा, मेरे जालिम दोस्त! बात दौलत की नहीं इज़्ज़त की है।

दरअसल हुआ यूँ कि जब जहाज़ ने लंगर उठा लिया तो फरेबी घूमता, फिरता और मटरगश्ती करता इमाम बुखारी तक पहुँचा और उनका साथ पकड़ लिया। हज़रत बुखारी उसे अल्लाह रसूल की बात बताने में बिजी हो गये। अल्लाह वालों में ये खूबी होती है कि नेकी और भलाई की बात हर किसी तक पहुंचाने की फिक्र में डूबे रहते और उसे नेकी की राह पर ले जाने को तत्पर रहते हैं। बहरहाल! वह ढ़ोंगी मन में बुराई लिये इमाम साहब की टोह ले रहा था कि कहीं कुछ दिखे और वह हाथ साफ करे। थोड़ी देर के अनुमान के बाद उसे मालूम हुआ कि इमाम साहब के पास हज़ार अशरफियों की एक थैली है। बस वह ताक में लग गया कि कैसे हाथ की सफाई का हुनर दिखलाए मगर मौक़ा हाथ नहीं आ रहा था, आखिरकार उसने वह ड्रामा रचा और मुँह की खाई।

❖❖❖

मुबारक और मनहूस की कल्पना इस्लामी नहीं

मौलाना मो0 ख़ालिद नदवी गाज़ीपुरी

इस्लामी तारीख का दूसरा महीना ''सफरुल मुजफ्फर'' है, इस्लामी महीनों में इसे यह विशेषता हासिल है कि उसका हदीसे पाक में मख़सूस अन्दाज़ में तज़्किरा आया है, और इससे सम्बन्धित वहम व ख़ुराफ़ात की नफी की गई है। वहम की बुनियाद वह नहूसत थी जो फितनों वबावों, अमराज और मसाएब व हादसों की शक्ल में कभी इस महीने में पेश आयी थी। और उसकी बुनियाद पर यह अकीदा क़ायम हो गया था कि सफर का महीना नहूसत तकलीफ व परेशानी का महीना है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इस अक़ीदे की पूरे तौर पर नफी फरमाई, और इन्सान को कामयाब ज़िन्दगी की राहों में सही अक़ीदे की रौशनी बख़शी। इरशाद फरमाया छूत–छात और सफर की कोई हकीकत नहीं। इस मफहूम की रिवायतें हदीस की किताबों में बकसरत वारिद हैं। जिनसे पता चलता है कि उस दौर के जाहिली समाज में अन्धविश्वास अक़ीदे की शक्ल अख़्तियार कर चुके थे मसलन छूत–छात, सअंद व नहस भूत प्रेत बग़ैरह।

जाहिलियत ने सफर को नामुरादी व नाकामी का संकेत बताया था, इस्लाम ने सफर को कामयाबी व कामरानी। यही वजह है कि इस्लामी महीनों में इसी महीने के साथ खुसूसन ''मुज्जफ्फर'' कामयाब की सिफत लगी हुई है। गोया इशारा इससे यह मिलता है कि यह अध्याय ज़फर व सआदत के हुसूल का ज़रिया है, न कि नहूसत व बदफाली का वहशतनाक दर्पण, जिसमें कुव्वते अमल टूटती हुई और उम्मीदें बिखरती हुई नज़र आती हैं।

सफर के तअल्लुक से यह अक़ीदा पाया जाता है कि वह एक किस्म का साँप है जो इन्सान के मेदा में परवरिश पाता है, और भूख की शिद्दत में जो तकलीफ महसूस होती है उसकी असल वजह वही साँप है जो इन्सान को डसता है, इस तसव्वुर से ही इन्सान लरज उठता है, और सफर की आमद से उसके तसव्वुरात व एहसासात में एक हलचल सी पैदा हो जाती थी।

इसी तरह दौरे जाहिलियत में सफर में ''नसई'' को जायज समझा जाता था और अमलन सारे पुरोहित उसके कायल थे। नसई कहते हैं महीना आगे पीछे करने की रसम को, यह रस्म आमतौर पर उस महीने में होती थी, यानी मोहर्रम को सफर तक पीछे कर दिया जाता था और फिर ऐन मोहर्रम के महीने में जो मोहतरम महीने में से था, उनकी ख़ूँन ख़राबे की कार्यवाहियां जारी हो जाती थीं। अय्याम मगाज़ी में मो0 बिन इसहाक ने लिखा है कि पहला शख़्स जिसने यह रस्म जारी की थी, वह कलमस किनानी था। फिर उसकी औलाद दर औलाद यूंही होता चला आया। आखिर में उसकी नस्ल से अबू गमामह नुनादह बिन औफ किनानी का मामूल था कि हर साल मौसमे हज में ऐलान किया करता कि इस साल मुहर्रम अशहुरे हज में दाख़िल रहेगा या सफर में। यही बात अल्लामा इब्ने असीर ने भी ''निहायह'' में तहरीर की है कि मोहर्रम को सफर तक पीछे करना है। इस्लाम ने नसई के इस अमल को लागू ही नहीं बल्कि अमले कुफ्र करार दिया है। लिहाज़ा उन सब की नफी हुजूरे अकरम सल्ल0 ने एक लफ्ज़ ''ल सफर'' से फरमा दी है। इसमें ऊपर दर्ज तीनों किस्म के अकीदे की नफी होती है। उसका मक्सद यह था कि मुस्लिम समाज को इन परेशानियों व खुराफात से आलूदा होने से बचाया जाए ताकि आहिस्ता आहिस्ता कहीं वह इन अंधविश्वासों की बुनियाद पर शिर्क

में मुब्तला न हो जाये, और ज़ाहिर है कि अगर कोई शख़्स किसी दिन और तारीख को मनहूस गर्दानता है और उसमें उसको मुअस्सिर ख्याल करता है तो यह शिर्क है इसलिए कि मुअस्सिर सिर्फ अल्लाह की जात है, बाज दिन और तारीखों में किसी क़ौम पर अगर नहूसत तारी हुई तो इसका मतलब यह नहीं कि वह हक़ीकत में नहूसत का सरचश्मा है इसलिए कि कुर्आने पाक में क़ौमे आद की तबाही का जहाँ जिक्र आया है वहाँ यह फरमाया गया कि क़ौमे आद पर अजाब जारी रहने वाली नहूसत के दिन आया, उस दिन का तअल्लुक पूरे हफ़्ते से है, इसलिए कि क़ौमे आद पर आठ दिन और सात रात तेज आँधियों का अजाब मुसल्लत रहा यहाँ तक कि पूरी क़ौम तबाह व बर्बाद हो गयी उनके महल्लात जमीन बोस हो गये और बागों में खाक उड़ने लगी, अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह0 ने इस आयत की व्याख्या में नक़ल किया है कि ''और यह नहूसत का दिन उन्हीं के हक़ में था यह नहीं कि हमेशा को वह दिन मनहूस समझ लिया जाये जैसा कि जाहिलों में मशहूर है और अगर वह दिन अजाब आने की वजह से हमेशा के लिए मन्हूस बन गया है तो मुबारक दिन कौन सा रहेगा। कुर्आने करीम में सराहत है वह अजाब सात रात और आठ दिन बराबर रहा बतलाइए अब हफ़्ते के दिनों में कौन सा दिन नहूसत से खाली रहेगा। चूंकि सफर की नहूसत दौरे जाहिलियत में फितनों और हवादिस के वाक़े होने से वाबस्तह की गई थी और उसको वह फितनों की तहरीक में मुअस्सिर ख्याल करते थे। लिहाज़ा इससे रोका गया और हर चीज़ का रुख मुअस्सिरे हक़ीक़ी अल्लाह रब्बुल इज़्जत की तरफ़ कर दिया गया। इसी तरह बारिश के होने को नक्षत्र की तरफ मन्सूब करने से भी रोका गया, और इसे कुफ्र बताया गया और इसी क़िस्म के तमाम मवाके में इस्लाम की तालीम का सिर्फ एक ही रुख है वह यह कि हर चीज़ अल्लाह की तरफ़ से है, और उसका इन्तिसाब उसी को ज़ेबा है।

इसके बावजूद अफसोस है कि जाहिलियत की बहुत सी रसमें मुस्लिम समाज में जब भी पाई जाती हैं और उसका लिहाज इस दर्जा किया जाता है कि जाहिलियत भी शरमा जाए। इन्हीं खुराफात में से सफरुल मुजफ्फर में ''तेरा तेजी'' का वहमी तसव्वुर है जो मर्दो में तो कम लेकिन औरतों के दिल व दिमाग़ पर ऐसा छाया हुआ है। कि हर हाल में इसकी पाबन्दी लाज़मी समझी जाती है। सफर के शुरु के 13 दिन इन्तिहाई मनहूस ख्याल किये जाते हैं। शादी–बयाह नहीं की जाती है दुल्हन की रुखसती नहीं होती है। कोई नया काम करने से गुरेज़ किया जाता है। इन दिनों में पैदाइश को भी कुछ अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता अगर विलादत किसी के यहाँ हुई तो समझा जाता कि उसकी आमद परेशानियों के आने का ज़रीया है और अगर खुदा न खास्ता कोई बात हो गई तो उसको फौरन इस नये मेहमान की आमद से जोड़ दिया जाता है। यह खालिस जाहिली तसव्वुर है जो हमारे मुआशरे में हिन्दुओं की वजह से रफ़्ता–रफ़्ता पैदा हुआ मुबारक व मनहूस का तसव्वुर कतअन इस्लामी नहीं जो कुछ होता है सिर्फ अल्लाह की तरफ से होता है। उसके हुक्म में किसी को इख़्तियार नहीं वह हर चीज़ पर क़ादिर है। एक मुसलमान की यही शान है कि उसका अंदरून उन वहमी तसव्वुरात से बिल्कुल पाक हो और जाहिर इताअ़ते रब्बानी पर शाहिद हो फिर उसको वह कूव्वते क़ाहिरा हासिल होगी जो किसी क़ौम व मिल्लत की क़यादत के लिए ज़रूरी है।

❖❖❖

ख़ुदा–ए–लम यज़ल का दस्ते–कुदरत तू, जबाँ तू है।
यकीं पैदा कर ऐ ग़ाफिल कि मगलूबे गुमाँ तू है।

नदवा परिसर में इल्मी व दीनी गतिविधियाँ

मजलिस तहक़ीक़ात शरइया नदवतुल उलमा, लखनऊ के अन्तर्गत ''लीगल लिट्रेसी कोर्स'' का उद्‌घाटन अल्लामा हैदर हसन खाँ टौंकी हाल में हुआ, इस ऐतिहासिक अवसर पर नाज़िम नदवतुल उलमा मौलाना सय्यद बिलाल हसनी नदवी ने बड़ी ख़ुशी का इज़हार किया और फरमाया ''इस कोर्स की बड़ी ज़रूरत महसूस हो रही थी कि मदरसों के तालिब इल्मों के लिए मुल्क़ी क़ानून के जानने का कोई इन्तिज़ाम किया जाए, अलहमदुलिल्लाह क़ानून की बुन्यादी जानकारी पर आधारित यह कोर्स नदवतुल उलमा की ओर से शुरु हो रहा है, इस कोर्स से जहाँ एक तरफ़ तालिब इल्म फ़ाइदा उठाएंगे वहीं दूसरी तरफ़ यह मुल्क व मिल्लत के लिए ताक़त व कूवत का साधन बनेगा, अगर हम मुल्क के क़वानीन से वाक़िफ नहीं होंगे तो क़दम क़दम पर मसाएल का सामना करना पड़ेगा'' इस अवसर पर ''इन्टीगिरल यूनिवर्सिटी'' लखनऊ के क़ानून विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नसीम अहमद जाफ़री ने लीगल लिट्रेसी कोर्स का विस्तार पूर्वक परिचय कराया।

दो दिवसीय शिक्षा अधिवेशनः-

यह अधिवेशन 17,18 अगस्त 2023 ई0 को हज़रत नाज़िम साहब दामत बरकातुहुम की संरक्षता में आयोजित हुआ, जिसमें नदवे से सम्बन्धित मदारिस के लगभग दो सौ ज़िम्मेदारों ने शिरकत की, नाज़िम साहब ने मेहमान ज़िम्मेदारों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि मौजूदा हालात के पेशे नज़र पहले से कहीं ज़्यादा दीनी मदरसों की, विशेष कर नदवतुल उलमा की ज़िम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं, अगर हमने अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस नहीं किया और आज के बढ़ते हुए बेदीनी के सैलाब को नहीं रोका तो कल क़यामत के दिन अल्लाह तआला के यहाँ हमसे पूछगछ होगी, दूसरे दिन के प्रोग्राम की अध्यक्षता नाज़िरे आम मौलाना जाफ़र हसनी नदवी ने की, उन्होंने इस अधिवेशन की ज़रूरत और अहमियत पर रोशनी डाली, अधिवेशन की अन्तिम गोष्ठी की अध्यक्षता मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी ने की उन्होंने अपने सदारती कलिमात में इख़लास व लिल्लाहियत पर ज़ोर दिया और फ़रमाया कि इस इजलास में जो पैग़ाम दिया गया है आप हज़रात उस पर अमल करें, इस वक़्त सुनने सुनाने से ज़्यादा अमल की ज़रूरत है।

वतन की फ़िक्र कर नादाँ

नौशाद खान

भारत वर्ष सदियों से प्रेम और शांति का प्रतीक रहा है, विभिन्न प्रकार की मानव जातियाँ इस देश में रहती आरही हैं, और हम समस्त संसार में अपनी गंगा जमुनी संस्कृति के गीत सुनते आरहे हैं। लेकिन कुछ वर्षों से भारत वर्ष नफरत की आग में जल रहा है, हम व्यक्तिगत रूप से जब लोगों से उनके निजी जीवन की स्थिति के बारे में बात करते हैं तो हर कोई अपना दुखड़ा सुनाने बैठ जाता है।

प्रतिदिन जब हम अख़बार पढ़ने के लिए उठाते हैं तो देश भर में बढ़ते अपराध, राजनीतिक घोटाले, दुष्कर्म के बढ़ते मामलात, चोरी डकैती, हत्या जैसे गंभीर अपराध की एक लम्बी सूची देखने को मिलती है, और भीड़ हिंसा के शिकार धर्म विशेष के लोग, धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक झगडे, निर्दोशों को जेल में बंद करना और दोषियो को खुली छूट, सत्ताधारी लोगों द्वारा महिलाओं पर अत्याचार, धर्म के नाम पर राजनीति, इंसानियत की अर्थी का उठ जाना, अपने स्वार्थ के कारण दूसरे के अधिकारों को रौंदना, और एक तरफा क़ानूनी कार्यवाहियाँ, युवाओं की बेरोजगारी, और आज़ाद पत्रकारिता की बढती आलोचनाएँ, और मीडिया का इन सब अत्याचारों पर चुप्पी साध लेना, पीड़ितों का शोषण और अत्याचारियों को खुली छूट मिलते रहना, हमारे बीच फैली इस प्रकार की कई चीजें हैं जिनका अगर विस्तार से लेखन किया जाये तो पढ़ने वाला समझे कि यहाँ से भलाई लुप्त हो गयी है।

अब चिंता का विषय यह है की हमारे देश को किस मार्ग पर ले जाने का प्रयास किया जा रहा है? जिसकी अनेकता और विभिन्नता के गुण पूरे संसार में गाये गए आज वो हर जगह आलोचनाओ का शिकार है, उसके पश्चात् भी एक विशेष सम्प्रदाय के लोग अपना व्यवहार परिवर्तित करने पे सहमत नहीं हो रहे हैं।

हमारे समस्त देशवासियों को ये मालूम होना चाहिए कि अत्याचारी और उनके सहायक और वो जो दूसरों पर जुल्म, अत्याचार, अन्याय करते हैं उस थोड़े से मूल्य के बदले में जो वो उन्हें अपने राजपाट और सिंहासन बचाने के लिए प्रदान करते हैं वो एक जाल और फंदा है जिसमें हम लोग बुरी तरह फँस चुके हैं। आज उनको हमारी आवश्यकता है इस लिए हमारी आज सहायता करेंगे लेकिन जब हमारी आवश्यकता न होगी तो हमारे साथ भी वही व्यवहार करेंगे जो वो लोग हमसे दूसरों के साथ करवाते हैं, और हम लोग ये समझते हैं कि हम सुरक्षित हैं तो बिलकुल नहीं कभी नहीं, जो लोग अन्याय और अत्याचार करते हैं वे कभी सुरक्षित नहीं रहते वे दुनिया में भी अपने कर्मो का फल भुगतते हैं और मरने के बाद तो भुगतना ही पड़ेगा।

कुछ स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ के लिए हमारा शोषण करते हैं क्यों?

इसलिए कि उनको ज्ञात है कि भारत वासी अपने देश के प्रति जितना हितैषी, प्रेमी, भावुक, और बलिदानी होता है उसी प्रकार वे अपने धर्म के लिए भी किसी हद तक जा सकता है, हमारी भावना ही हमारी सबसे

बड़ी कमज़ोरी है, सांम्प्रदायिक लोग हमारी भावनाओं का दुरूपयोग अपनी कुर्सी, अपने स्वार्थ, और सिंहासन के लिए करते हैं उनके यहाँ भावना केवल पैसों का, और शक्ति प्राप्ति का, और संपत्ति प्राप्ति का, और झूटी प्रसिद्धि का एक खेल है।

इस घातक काल में अगर आशा किसी से हो सकती थी तो वो मीडिया और पत्रकारिता से हो सकती थी उन्होंने उसको भी खरीद लिया अब वे जब चाहते हैं जो चाहते हैं, जैसा चाहते हैं, और जितना चाहते हैं दिखाते हैं, पत्रकारिता की पूर्णता कार्य यह था के वो आज़ाद रहती, वो भी देश के साथ देशहित के नाम पर विश्वासघात कर रही है।

मीडिया को खरीदने के बाद देश के तमाम विभागों में अपने प्रतिनिधियों को बिठाया ताकि कभी भी किसी भी स्थान पर उनके विरुद्ध कोई आवाज़ न उठ सके और वे जो चाहें करें, किन्तु वे लोग ये नहीं जानते की अत्याचार के साथ राजपाठ नहीं चलता बल्कि न्याय के साथ चलता है, क्योंकि यह ईश्वर द्वारा बनाये गए सिद्धांत हैं जो दूसरों के लिए लाभदायक होगा उसी को उत्तरजीविता प्राप्त होती है।

इस लिए हमें लाभदायक बनना है दूसरों के साथ भाईचारे और प्रेम के साथ रहना है हमें अपने स्वार्थ को पीछे रख कर अपने भाईयों की चिंता करना चाहिए हम मानव हैं और हमें मानवता को आगे रखना चाहिए और धर्म को अपने निजी जीवन में लागू करना चाहिए, आज यही सबसे बड़ी दुविधा है कि हम धर्म के नाम पर मरने मारने और कुछ भी करने को तैयार हैं किन्तु हम व्यक्तिगत रूप से धर्म से बहुत दूर हैं अगर कोई धर्म पर चलता है तो वो कट्टरता, हिंसा, और अत्याचार को कभी नहीं अपनाता उसे बुराई और हिंसा से घृणा होती है और वो हमेशा मानवता को सर्वपरी रखता है।

इस लिए हमें समझदार बनना होगा और हमें हालात से पाठ लेना होगा अपनी अपेक्षाओं भावनाओं को नियंतरण में रखना होगा ताकि कोई हमारा दुरूपयोग न कर सके, जब देश का हर नागरिक व्यक्तिगत रूप से अपनी जिम्मेदारी समझते हुए कार्य करेगा तो देश अपने आप विकास और प्रगति की ओर बढ़ेगा लेकिन जब मानव जाति एक दुसरे को ख़त्म कर देगी तो देश शर्मसार होगा और इस देश के लिए बलिदान देने वालों की आत्मा को ठेस पहुँचेगी। जिसके लिए देश हमें कभी माँफ नहीं करेगा आज हमारी जो भी स्थिति है या इससे भी बुरी दशा आने वाली है उसके हम खुद ज़िम्मेदार होंगे, इसलिए आज ही हमें इसका समाधान निकालना चाहिए और मानवता और भाईचारे को फैलाना चाहिए क्योंकि एक दुसरे के काम आना, भूखों को खाना खिलाना, प्यासे को पानी पिलाना, कमजोरों की मदद करना, भटके हुए को सही मार्ग दिखाना, महिलाओं को सम्मान देना, माता पिता की सेवा करना और अपने ईश्वर से सदेव लगाव रखना ये ऐसे शुभ कार्य हैं जो हमें सफलता की ओर ले जा सकते हैं।

किसी कवि ने कहा है कि–

वतन की फिक्र कर नादाँ मुसीबत आने वाली है।
तेरी बर्बादियों के मशवरे हैं आसमानों में।।

(–लेखकः भाषा एवं पत्रकारिता विभाग दारुलउलूम नदवतुल उलमा के छात्र हैं)।

❖❖❖

पाचन तंत्र को दुरुस्त करे वन तुलसी

डॉ0 चारू गाबा

तुलसी के कई प्रकारों में एक है वन तुलसी। यह तुलसी पौष्टिक तत्वों से भरपूर है। आयुर्वेद में वन तुलसी का उपयोग भूख बढ़ाने, दिल को स्वस्थ रखने, आँखों के रोगों को दूर करने पेट दर्द को दूर करने में किया जाता है। वन तुलसी के फूल, बेहद सुगंधित और सफेद और बैगनी रंग के होते हैं वन तुलसी ऐंटी ऑक्सिडेंट, ऐंटी माइक्रोबियल, ऐंटी ट्यूमर और ऐंटी इंफ्लेमेट्री गुणों से भरपूर होती है। पेट खराब होने या पाचन तंत्र के सही तरीके से काम न करने पर वन तुलसी का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके पत्तों में डाइजेस्टिव गुण पाया जाता है। वन तुलसी के बीज, पत्ते और जड़ का औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन हमेशा इसका उपयोग डॉक्टर की सलाह पर ही करें।

कान दर्द में राहतः

कान का दर्द असहनीय होता है। इस दर्द को दूर करने में वन तुलसी बेहद काम आ सकती है। इसके लिए वन तुलसी के रस को कान में डालें और थोड़े समय के लिए ऐसे ही छोड़ दें, ऐसा करने से कान के दर्द से राहत मिलेगी।

मूत्र रोगों में फायदेमंदः—

मूत्र रोगों से छुटकारा दिलाने में भी वन तुलसी आपके बेहद काम आ सकती है। ऐसे में आप वन तुलसी के अर्क का सेवन मिश्री के साथ करें। ऐसा करने से मूत्र रोग तो दूर होंगे ही साथ ही शरीर के विषाक्त पदार्थ भी मूत्र के माध्यम से बाहर आ जाएंगे।

> माइग्रेन और साइनस के मरीज़ों के लिए वन तुलसी का सेवन बहुत उपयोगी है। वन तुलसी माइग्रेन के अटैक को कम करती है और सिर दर्द से आराम दिलाती है।

साइनस से छुटकाराः—

साइनस की समस्या को दूर करने में भी वन तुलसी बहुत काम आ सकती है। वन तुलसी के पत्तों को पीस कर अगर प्रभावित स्थान पर लगाया जाए तो साइनस से आराम मिलता है। इससे अलग जो लोग माइग्रेन की समस्या का शिकार हैं वे भी जंगली तुलसी का सेवन कर इस समस्या से राहत पा सकते हैं।

मोच को करे ठीकः—

वन तुलसी के पत्तों को पानी से धोएं और उसका पेस्ट तैयार करें। अब उसे प्रभावित स्थान पर लगाएं, ऐसा करने से मोच के दर्द में आराम मिलेगा।

बुखार में मिले आरामः—

बुखार की समस्या में शरीर में बेहद कमज़ोरी और तापमान बढ़ता या घटता महसूस करते हैं। ऐसे में वन तुलसी के बीज बुखार को दूर करने में बेहद उपयोगी हैं। ऐसे में आप वन तुलसी के बीजों को पीसें और उसका शरबत बनाएं। उस शरबत को पीने से बुखार ठीक हो सकता है।

(आयुष चिकित्सालय, कल्ली पश्चिम लखनऊ)

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

फुटबॉल वर्ल्ड कप में हिजाब पहन रचा इतिहास:-

■ मोरक्को की डिफेंडर नुहैला बेन्जिना ने फुटबॉल कप में दक्षिण कोरिया के खिलाफ़ मैच में हिजाब पहन कर इतिहास रच दिया।

■ मोरक्को ने 1–0 से जीत दर्ज की।

■ **FIFA** ने साल 2014 में धार्मिक कारणों से सिर ढंकने को मंजूरी दी थी।

■ मोरक्को उन आठ टीमों में से एक है जो इस साल महिला वर्ल्ड कप में डेब्यू कर रही है।

ऐसा स्कूल, जहाँ *17* जुड़वा बच्चे:-

स्कॉटलैंड के 32 काउंसिल इलाकों में से एक इन्वरक्लाइड *(Inverclyde)* में एक चौंकाने वाली ख़बर सामने आई है। वहां अगले सप्ताह से शुरू हो रहे इनवरक्लाइड के स्कूलों में 17 जोड़े जुड़वा बच्चों ने दाखिला लिया है। यह दूसरी सबसे बड़ी रेकार्ड संख्या है। इससे पहले 2015 में रेकॉर्ड 19 जोड़े जुड़वा बच्चों ने इन्वरक्लाइड के स्कूलों में दाखिला लिया था।

सबसे लंबी दाढ़ी वाली महिला हैं एरिन:-

अमेरिका की महिला ने बीमारी को उपलब्धि में बदल दिया।

मिशिगन की 38 साल की एरिन हनीकट के नाम सबसे लंबी दाढ़ी रखने वाली जीवित महिला का वर्ल्ड रेकॉर्ड है। उनकी दाढ़ी 11.8 इंच लंबी है। उन्होंने 75 वर्षीय विवियन वीलर का रेकॉर्ड तोड़ा है। विवियन भी अमेरिका की है, जिनकी 10.8 इंच लंबी दाढ़ी थी। एरिन को पॉलिसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम *(Polycystic Ovarian Syndrome)* है, जिसकी वजह से हार्मोनल बदलाव होते हैं और शरीर में अतिरिक्त बाल उगते हैं।

उल्टे बैठ कर *500* मील साइकल चलाई:-

अमेरिका में अलास्का के साइकल चालक विल वॉकर ने 500 मील यानी 804 किलोमीटर उलटी साइकल चला कर रेकॉर्ड बनाया है। वॉकर ने ''ग्रेट बाइसिकल राइड अक्रास आयोवा'' में हिस्सा ले कर यह रेकॉर्ड बनाया। खास बात यह कि इस दौरान लगभग 30,000 अन्य साइकल चालकों ने भी 804 मिलोमीटर की यह दूरी पूरी की। लेकिन वॉकर एकमात्र ऐसे सदस्य थे जिन्होंने सीट के बजाय साइकल के हैंडल बार पर बैठ कर यह यात्रा पूरी की।

रेलवे का निर्माणाधीन पुल ढहा, *18* मजदूरों की मौत:-

■ मीजोरम के आइजोल जिले में 100 मीटर ऊँचे निर्माणाधीन रेलवे पुल के ढह जाने के कारण 18 मजदूरों की मौत हो गई। पाँच लापता हैं। घायलों में अधिकतर पश्चिम बंगाल के रहने वाले हैं।

■ पुलिस के अनुसार घटनास्थल पर कई अन्य लोगों के फंसे होने की आशंका है, घटना के वक़्त 35–40 मजदूर मौजूद थे।

■ रेलवे का कहना है कि गैन्ट्री (एक तरह की क्रेन) गिरने से हादसा हुआ है।

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 01/10/2023 तاریخ

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्डिंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।

नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/— (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखेंः
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजेंः
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **8736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
—ःतअ़मीरः—
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date : 1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 22 - Issue 08

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC & RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3